जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष - ५५ अंक - ५
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १००) रु०
आजीवन - १०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

वैशाख: सम्वत् २०७० वि० मई २०१३

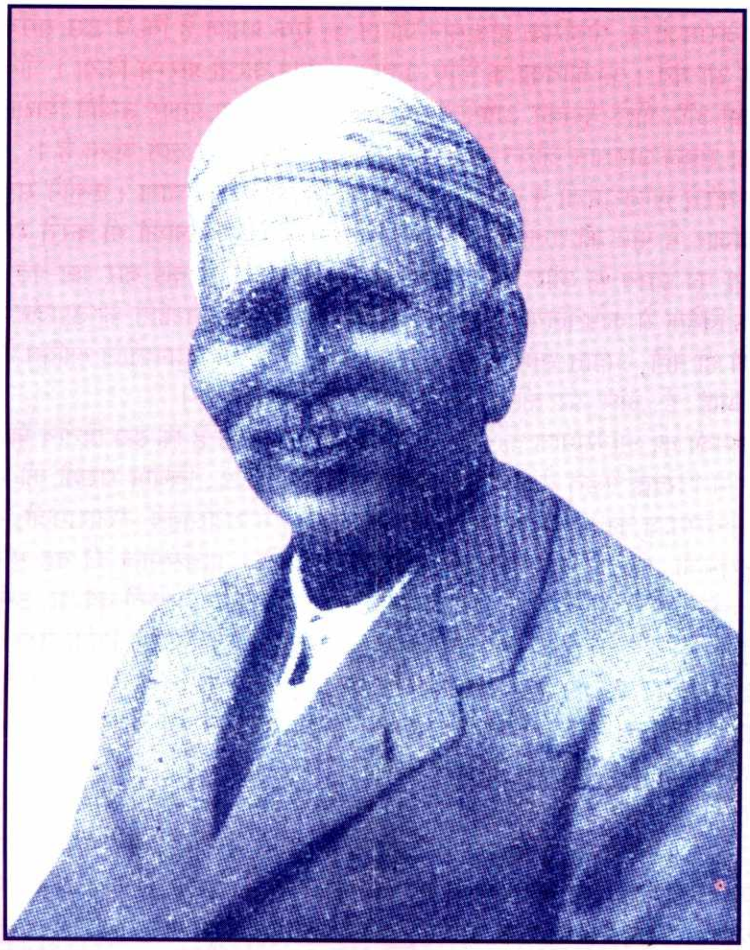

सेठ चौधरी छाजूरामजी

चौधरी छाजूरामजी

आर्यसमाज कलकत्ता के आरम्भिक काल में जिन कुछ व्यक्तियों की छबियाँ महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं, चौधरी छाजूरामजी उनमें अग्रगण्य हैं । आर्यसमाज कलकत्ता की स्थापना दिवस में राजा तेजनारायण सिंह, महाबीर बाबू और पं० शंकरनाथजी पण्डित जैसे लोगों को श्रेय है तो दूसरी पीढ़ी में आर्यसमाज के लिए भूमि लेना, मन्दिर-निर्माण करवाना, कन्या विद्यालय की स्थापना और कन्या विद्यालय के लिए भवन आदि की व्यवस्था करवाना, इस सब कामों में चौधरी सर छाजूराम का नाम सदा बड़े सम्मान से स्मरणीय रहेगा । वस्तुतः आर्यसमाज की स्थापना को यदि हम राजा तेजनारायण और पं० शंकरनाथ पण्डित का युग कह लें तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् आर्यसमाज के कार्यों को स्थायी रूप देना और उन्हें प्रगति के पथ पर अग्रसारित करना, यह चौधरी छाजूराम जैसे कुछ लोगों का कृतित्व था । इस दृष्टि से आर्यसमाज कलकत्ता की दूसरी पीढ़ी को चौधरी छाजूराम युग के नाम से अभिहित करने में ही इतिहास के साथ न्याय होता है ।

चौधरी छाजूराम का जन्म सन् १८६२ ई० में हरियाणा के भिवानी अंचल में अलखपुर के एक साधारण कृषक जाट परिवार में हुआ था छाजूरामजी बुद्धिमान विद्यार्थी थे और एन्ट्रन्स की परीक्षा पास करके आप कलकत्ता आ गये । यह भी छाजूरामजी के साहसिक बुद्धिमान जीवन का एक प्रमाण है कि वे उस समय बिना किसी समर्थ सहायक के कलकत्ता आ गये । आजीविका के लिए उन्होंने ट्यूशन करना प्रारम्भ किया । जीवन का आरम्भ एक शिक्षक के रूप में हुआ और पीछे चलकर अपनी विपुल धनराशि से जिस प्रकार उन्होंने शिक्षा-जगत् की सेवा की है, उसकी भूमिका का सहज अनुमान जीवन के इस आरम्भिक कार्यक्षेत्र से लग जाता है ।

ट्यूसन करते-करते छाजूरामजी ने व्यावसायिक गतिविधि को भी पहिचाना । उन्होंने सट्टा का काम आरम्भ किया, फिर शेयर बाजार में पाट की दलाली की और अन्त में बोरों की दलाली भी करते रहे । बताया जाता है कि यह प्रथम विश्वयुद्ध का समय था और छाजूरामजी को भी व्यवसाय की कई बार घट-बढ़ देखनी पड़ी । फिर भी अपने व्यावसायिक विवेक से काम लिया । सदा धैर्य से रहे और अपार धनराशि का उपार्जन किया । छाजूरामजी एक कुशल व्यवसायी ही नहीं, अपितु सामाजिक कार्यकर्त्ता और बड़े उदार दानशील व्यक्ति थे । ब्रिटिश सरकार ने चौधरीजी को सी.आई. ई. और सर की उपाधियों से विभूषित किया था ।

चौधरी छाजूरामजी का आर्यसमाज कलकत्ता में इतना बड़ा योगदान है कि इस द्रितीय पीढ़ी में चौधरीजी सारे कार्यों में प्रथम पंक्ति में दिखाई पड़ते हैं । जब आर्यसमाज के लिए १९, विधान सरणी की भूमि का क्रय किया गया तो उस समय आर्यसमाज का एक ट्रस्ट बना था । उन ट्रस्टियों में रायसाहब रलारामजी, सेठ जयनारायणजी पोद्दार, चौधरी छाजूरामजी, पं० शंकरनाथ पण्डित इत्यादि मुख्य थे । आर्यसमाज की यह भूमि इन्हीं ट्रस्टियों के नाम खरीदी गयी थी । सन् १९१० ई० में जो आर्यसमाज कलकत्ता का रजत जयन्ती वर्ष था, उसी समय आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण हुआ । सन् १९१९ ई० में आर्यसमाज कलकत्ता का पञ्जीकरण किया गया । उस पंजीकरण के समय पंजीकरण के दस्तावेज में जिन अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यों की सूची दी हुई है उसमें सेठ चौधरी छाजूरामजी आर्यसमाज कलकत्ता के कोषाध्यक्ष थे । चौधरी छाजूरामजी जैसा दानदाता व्यक्ति आर्यसमाज कलकत्ता का कोषाध्यक्ष हो यह भी अपने उचित-सी ही बात लगती है ।

आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना सन् १९०२ ई० में हुई । सन् १९१० ई० में आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण हुआ और सन् १९०२ ई० में कन्या विद्यालय के लिए एक पुराना मकान खरीद गया । जिस जगह पीछे २० नं० विधान सरणी का कन्या विद्यालय का विशाल भवन बनवाया गया । उस समय भवन-निर्माण की दृष्टि से रुपयों की बहुत आवश्यकता थी । इस निमित्त एक सभा की गयी जिसमें सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला, सेठ छाजूरामजी चौधरी, सेठ जयनारायणजी पोद्दार, श्री तुलसीदासजी दत्त प्रत्येक ने २५-२५ हजार रुपये दान देकर एक लाख एकत्र कर लिया । कहते हैं कन्या विद्यालय की लड़कियों ने एक गीत गाया था जिसका भाव यह था कि हमको

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५५ अंक — ५

वैशाख-२०७० वि०
दयानन्दाब्द १८९
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४

मई— २०१३

मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

सम्पादक :
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय, एम. ए.

सह सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्य प्रकाश जायसवाल
पं० योगेश राज उपाध्याय

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज की गतिविधियाँ — २
२. इस अंक की प्रस्तुति — ३
३. परिश्रम करो, आनन्द से रहो — ४
४. महर्षि वचन सुधा-२१ -प्रो० उमाकान्त उपाध्याय — ७
५. आर्य समाज : अंगारे पर घेरती राख -प्रो० उमाकान्त उपाध्याय — ९
६. तुलनात्मक अध्ययन विषयक साहित्य -डॉ० भवानीलाल भारतीय — १२
७. साहित्य समीक्षा-यजुष्-साम-विमर्श -प्रो० उमाकान्त उपाध्याय — १४
८. मोदी को प्रधान-मन्त्री बनाना समय की मांग -श्री खुशहाल चन्द्र आर्य — १५
९. ऋषि दयानन्द का जन्म दिवस -श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक' — १८
१०. राष्ट्र वन्दना -श्री देवनारायण भारद्वाज — २०
११. विश्व की सर्वश्रेष्ठ, वरणीया प्रथमा संस्कृति-वैदिक-संस्कृति -प्रो० ओम कुमार आर्य — २३
१२. एक वह दिन-एक यह रात -श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य — २६

आर्य समाज कलकत्ता
१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६, दूरभाष : २२४१-३४३९
email : aryasamajkolkata@gmail.com

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा।

परिश्रम करो, आनन्द से रहो

अक्षैर्मादीव्यः कृषिमित् कृषस्व, वित्ते रमस्व बहुमन्यमानः ।
तत्र गावः कितव तत्र जाया, तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः ।। ऋ० १०-३४-१३

शब्दार्थ :-

अक्षैः	=	जुआ के पासों से	तत्र जाया	=	उसी में गृहस्थ सुख, गृहस्थ का उपलक्षण, पत्नी
मा-दीव्यः	=	मत खेलो			
कृषिम्-इत्	=	निश्चय ही कृषि, परिश्रम			
कृषस्व	=	परिश्रम करो	तन्मे	=	वह सब मुझे
वित्ते रमस्व	=	अपनी कमाई में आनन्द से रहो	विचष्टे	=	अच्छी तरह बता दिया है
			सविता	=	उत्पन्न करने वाले प्रभु ने
बहुमन्यमानः	=	बहुत पर्याप्त मानकर	अयमर्यः	=	इस स्वामी ने (सम्पत्ति का उपलक्षण),
तत्र गावः	=	उसी में गौ आदि सम्पत्ति,	कितव	=	हे जुआड़ी

भावार्थ :- जुआ मत खेलो, कृषि आदि परिश्रम के काम करो। अपनी कमाई को पर्याप्त मानकर उसी में आनन्द से रहो । सविता स्वामी ने यह अच्छी तरह समझा दिया है कि अपनी कमाई में ही सम्पत्ति सुख एवं परिवार सुख है ।

व्याखान विन्दु :

१. **परिश्रम और सामञ्जस्य का चरम कृषि ।**
२. **स्वार्थ का, कामचोरी का चरम जुआ ।**
३. **अपने परिश्रम में जो मिले उसे पर्याप्त समझो ।**
४. **परिश्रम में सबको सुख है**

व्याख्या

प्रस्तुत मन्त्र में मनुष्य को परिश्रम करके जीवन-यापन करने का मार्ग बताया गया है । मन्त्र अलंकार की प्रतीकात्मक व्याख्या में कहता है कि हे मनुष्य ! तू परिश्रम से कृषि कर और अपनी कमाई में, उपार्जन में संतुष्ट रह कर आनन्द मना। हे मनुष्य ! जुआ मत खेल । जुआ परिश्रम-हीनता का प्रतीक है। मुफ्त में धन पाने की मत सोच ।

प्रश्न यह है कि कृषि में क्या अच्छाई या विशेषता है और जुआ में क्या बुराई है ? थोड़ा विचार करके देखें तो कृषि परिश्रम और सामंजस्य के चरम पर निवास करती है । किसान, भूमि, बीज, पशु, पशु-पालन, प्रकृति के नियम सब के सहयोग और सामंजस्य से कृषि की जाती है । कृषि में जीवन-निर्वाह के उपादान अन्न, वस्त्र उत्पन्न होते हैं । भोजन, दूध, वस्त्र, मकान सब का मूल कृषि में बसता है । बिना किसान के परिश्रम के उद्योग व्यर्थ, संचार परिवहन व्यर्थ, इसीलिये कृषि को मानव समाज के निर्वाह की प्रथम इकाई कहते हैं । उद्योग दूसरे नम्बर पर और सेवायें तीसरे नम्बर पर हैं । मानव-समाज की मूल आवश्यकताएं कृषि से ही पूर्ण होती हैं । अतः सारे समाज के सुख सौभाग्यों की जड़ कृषि में निवास करती है ।

जुआ में चरम-कोटि का स्वार्थ, परिश्रम-हीनता दूसरे को छका कर, ठग कर अपना उल्लू सीधा करना होता है । अतः जुआ, चोरी, झगड़ा, हरामखोरी सब की जड़ है । जुआरी कभी परिश्रम नहीं करना चाहता और दूसरे को ठग कर अपना उल्लू सीधा करता है । बुराइयाँ बड़ी संक्रामक होती हैं, एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी सब धीरे-धीरे जुआरी में डेरा डाल देती हैं । एक श्लोक हैं—

''भिक्षो मांस निषेवणं प्रकुरुषे ? किं तेन मद्यं बिना,
मद्यं चापि तव प्रियं ? प्रियमहो वाराङ्गनाभिः सह ।
वेश्या द्रव्यरुचिः कुतस्तव धनं ? चौरेण द्यूतेन वा
चौरद्यूत परिग्रहोऽपि भवतः ? नष्टस्य कान्या गतिः''

एक भिखारी माँस खा रहा था । किसी ने पूछा-अरे भिखारी ! तू माँस खा रहा है । भिखारी बोला—बिना शराब के माँस का कोई आनन्द नहीं । तो तू शराब से भी प्यार करता है ! प्यार तो बहुत है यदि वेश्याएँ मिलें । वेश्या को तो रुपया चाहिये और तुम तो भिखारी हो ! भिखारी बोला—चोरी करता हूँ और जुआ खेलता हूँ । तो तुम्हारे चोरी-जुआ का भी चक्कर है ! भिखारी बोला-चोर, जुआरी जिनका जीवन ही नष्ट हो गया हैं, उनके भिक्षा, शराब, वेश्या, चोरी, जुआ सब कुछ साथ लग जाता है । जुआ सारे पतन की जड़ है । अतः मन्त्र में बड़ी कड़ाई से निर्देश किया गया हैं कि जुआ मत खेलो, खेती करो । मन्त्र में कहा गया है कि अपने परिश्रम में जो कुछ प्राप्त हो उसी को बहुत समझो और उसी में आनन्द से जियो । सब के स्वामी परमेश्वर ने परिश्रम में ही सम्पत्ति-सुख और परिवार-सुख, सब कुछ दिया है । वस्तुतः कृषि से अधिक सार्थक उत्पादन देने वाला संसार में कोई धन्धा नहीं है । हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने कहा है -

''यह धरती कितना देती है ।''

एक दिन पन्त जी को सेम के दो दाने मिल गये । उन्होंने अपनी छत से जहाँ पानी गिरता था वहाँ दोनों बीज़ धरती में ढँक दिये । सेम के पौधे बड़े हुए । सारा घर महीनों खाता रहा, पड़ोसियों को बाँटता रहा । धरती में एक दाना बीज का पड़ता है और वह सैकड़ों दाने लौटा देती है । अतः सम्पत्ति का

सबसे सुन्दर साधन कृषि है और विपत्ति का सबसे भयानक साधन जुआ है । कृषि में सम्पत्ति का सुख है, गायों का सुख है, परिवार का सुख है, पत्नी और बच्चे, पूरे गृहस्थ का सुख है, यहीं अन्न का दान भी होता है । अतः मन्त्र का सन्देश है कि सबके प्रेरक प्रभु ने हमें बताया है कि अपने उपार्जन में ही सम्पत्ति का सुख है, उसी में दान, पुण्य का साधन है ।

अतः उत्तम खेती है और जुआ पतन है । जुआड़ी की पत्नी, उसके बच्चे, परिवार सभी दुःख पाते हैं । जुआड़ी का परिवार, सन्तान, कोई भी उन्नति नहीं कर पाते । अतः जुआ अधम, निकृष्ट है ।

--वेद वीथिका से साभार

(शेषांश पृष्ठ २ का)

भूल मत जाना । इस गीत से चौधरी छाजूरामजी ऐसे पिघल गये कि उन्होंने अपनी २५ हजार की राशि ५० हजार कर दिया । इन सब कार्यों से चौधरी छाजूरामजी का एक ओर जहाँ आर्यसमाज के प्रति प्यार, श्रद्धा और आस्था व्यक्त होती है वहाँ उनकी प्रबल उदार दानशीलता भी प्रमाणित हो जाती है ।

सन् १९३५ ई० में महिलाओं की शिक्षा इत्यादि की उन्नति के लिए एक महिला-मण्डल ट्रस्ट का निर्माण किया गया । इस मण्डल के ट्रस्टियों में प्रथम नाम ही सर छाजूरामजी चौधरी के० टी० सी० आई० ई०, बैंकर एण्ड मर्चेन्ट, २१, बेलवीडियर रोड़ लिखा हुआ है । इस महिला-मण्डल ट्रस्ट के सर छाजूराम चौधरी ही प्रथम संस्थापक प्रधान थे ।

चौधरी छाजूरामजी कलकत्ता में उन दिनों आर्यसमाज के अग्रगण्य कार्यकर्त्ता तो थे ही, साथ ही सरकार से भी के०टी०सी०आई० ई० और सर आदि की उपाधियों से सम्मानित हुए थे । इससे यह छवि बन सकती है कि चौधरीजी बृटिश शासन के भक्त थे । चौधरीजी सार्वजनिक कार्यकर्त्ता थे । उदार दानी थे और जनकल्याण के कार्यों में खुलकर दान करते थे । कलकत्ता के अतिरिक्त हिसार में डी०ए०वी० कालेज को एक लाख रुपये दिया था और पीछे २ लाख रुपये लगाकर हिसार डी०ए०वी० कालेज का छात्रावास बनवाया । रोहतक में जाट हाई स्कूल के लिए एक लाख रुपयों का दान किया । हिसार में जाट हाई स्कूल और छात्रावास के लिए चार लाख रुपयों का दान किया । भिवानी में पाँच लाख रुपये लगाकर एक महिला अस्पताल बनवाया । सन् १८९९ ई० में दो लाख रुपये अकाल पीड़ितों की सहायता में व्यय किया । यह सब अपने में इतिहास का एक अनुपम अंग-सा बन गया है और बृटिश सरकार ने उन्हें जो उपाधियों से सम्मानित किया, उसका कारण ये सब जनसेवाएँ है ।

चौधरी छाजूरामजी केवल निष्ठावान् धार्मिक व्यक्ति, समाज-सेवी, सफल व्यवसायी और उदार दानी ही नहीं थे। बल्कि वे स्वतन्त्रता प्रेमी और क्रान्ति के सम्पोषक भी थे । यह सब अपने में विषमयोग-सा लगता है । किन्तु चौ० छाजूरामजी ही थे

भी थे । यह इतिहास प्रसिद्ध घटना है कि अमर शहीद भगतसिंहजी दुर्गा भाभी और उनके पुत्र को साथ लेकर एक विवाहित युवक का रूप बनाकर, दाढ़ी-बाल कटवा कर गैरसिख रूप में कलकत्ता आये थे । पुलिस भगत सिंह की खोज में तो थी, पर उन्हें अविवाहित, दाढ़ी-केशों वाला सिख युवक समझकर सूराग लगा रही थी । इधर भगतसिंह थे कि उन्होंने बाल कटा दिये और दुर्गा भाभी तथा उनके पुत्र को ऐसे साथ ले लिया जैसे यह उन्हीं का परिवार हो । पुलिस को यह चकमा देकर भगतसिंह हावड़ा स्टेशन पर उतरे । यह साण्डर्स-वध के पश्चात् भगत सिंह का फरारी का रूप था । कलकत्ता आना और सिख के गैर-सिख रूप बना लेना, अविवाहित से पत्नी-पुत्र का जुगाड़ कर लेना जितना कठिन कार्य था, उससे कम कलकत्ता में छिपकर रहना न था । क्रान्ति की योजना के अनुसार सुशीला दीदी चौधरी छाजूराम के यहाँ ही रहती थीं और चौधरीजी की पत्नी लक्ष्मी देवी

नहीं करता था । किन्तु जब भगत सिंहजी दुर्गा भाभी आदि को लेकर आ गये तो ये भी सर छाजूराम के ही अतिथि बने । यह सर छाजूरामजी की क्रान्ति-भक्ति का एक सुस्पष्ट निदर्शन है । (शेष पृष्ठ २८ पर)

''महर्षि वचनसुधा'' – २१

–प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति ।

यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्मेति ।।'' तैत्तिरीयोपनि० ।।

जिस परमात्मा की रचना से ये सब पृथिव्यादि भूत उत्पन्न होते हैं, जिससे जीवते और जिसमें प्रलय को प्राप्त होते हैं । वह 'ब्रह्म' है, उसके जानने की इच्छा करो ।

जन्माद्यस्य यतः ।। शारीरक सू० अ० १/पा० १/सू० २ ।।

जिससे इस जगत् का जन्म, स्थिति और प्रलय होता है, वही 'ब्रह्म' जानने के योग्य है ।

सत्यार्थ० अष्टम समु०

प्रस्तुत उद्धरण सृष्टि की रचना उसके पालन और प्रलय इत्यादि से सम्बन्धित है । स्वामी दयानन्द जी महाराज की यह रीति है कि वे पहले किसी सिद्धान्त का शास्त्रीय प्रमाण देते हैं पीछे लौकिक तर्कों से उसका अनुमोदन करते हैं । प्रस्तुत प्रसंग में सृष्टि की रचना का पालन और प्रलय का शास्त्रीय प्रमाण दे रहे हैं ।

सृष्टि रचना, पालन और प्रलय आदि में तीन तत्त्व अनादि रूप से उपस्थित है । ईश्वर नित्य सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् आदि है । जीवात्मा नित्य तो है किन्तु अल्पज्ञ और अल्प सामर्थ्य का है । प्रकृति नित्य है किन्तु जड़ है । अतः कुछ करने में स्वयं असमर्थ है । जीवात्मा में सामर्थ्य तो है किन्तु अल्प सामर्थ्य है ।परमेश्वर सर्वशक्तिमान्, सर्वसामर्थ्यवान् हैं किन्तु अपनी मनमानी नहीं करता। संसार का जो नियम है उसी नियम के अनुसार परमेश्वर सृष्टि की रचना, पालन और प्रलय करता है ।

वेदान्त दर्शन में प्रथम के चार सूत्र इस तथ्य को बहुत सुस्पष्ट रूप से वर्णन कर रहे हैं–

१. **''अथातो ब्रह्म जिज्ञासा''**–ब्रह्म की जिज्ञासा करते हैं ।

२. **''जन्माद्यस्य यतः''**–जिससे इस जगत् का जन्म, स्थिति और प्रलय होता है, वही 'ब्रह्म' जानने के योग्य हैं ।

३. **''शास्त्र योनित्वात्''**–वह ब्रह्म वेद शास्त्र का निर्माता है

४. **'तन्तु समन्वयात्'**– अर्थात् जैसा संसार में दिखायी पड़ता है वैसा ही वेद में वर्णन किया गया है , जैसा वेद शास्त्र में वर्णन मिलता है वैसा ही संसार में देखा जाता है ।

इन चारों सूत्रों में, परमेश्वर सृष्टि की रचना करने वाले है, इस तथ्य को एक अलग रीति से

प्रमाणित किया गया है ।

परमेश्वर कवि हैं उनके दो काव्य है— एक श्रव्य श्रुति वेद है और दूसरा दृश्य काव्य यह संसार है । भाव यह हुआ कि परमेश्वर का एक काव्य वेद है जो श्रव्य है और दूसरा दृश्य है जो दर्शनीय यह भौतिक संसार है । वेदान्त दर्शन का कहना है कि परमेश्वर के श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य अर्थात् श्रव्य वेद और दृश्य संसार दोनों में समन्वय है, जैसा वेद में वर्णन है वैसा ही इस दृश्य संसार में, इस नाशवान जगत् में पाया जाता है । इससे प्रमाणित यह होता है कि दोनों काव्यों का कर्त्ता, रचयिता, संचालनकर्त्ता परमेश्वर ही है । क्योंकि, जैसा वेद में है वैसा सृष्टि में पाया जाता है और जैसा सृष्टि में पाया जाता है वैसा ही वेद में वर्णन मिलता है । इससे पता चलता है कि जिसने सृष्टि का निर्माण किया है उसी ने सृष्टि के संचालन, पालन, संरक्षण के नियम वेदों में दिये हैं ।

इस तथ्य को एक लौकिक उदाहरण से समझते हैं । कल्पना कीजिये कि फिलिप्स एक निर्माता कम्पनी है । उसने कोई यन्त्र बनाया, उस संयन्त्र के चाल चलाने सम्भाल करने आदि का कुछ नियम एक पुस्तिका में प्रकाशित कर दिया । अब जो पुस्तक में लिखा है वही यन्त्र में मिलता है तो सयन्त्र और पुस्तिका दोनों का निर्माता एक ही कम्पनी है । यदि यन्त्र दूसरी कम्पनी का होगा और पुस्तिका दूसरी कम्पनी की होगी तो पुस्तक और संयन्त्र दोनों में तालमेल समन्वय नहीं होगा । सृष्टि में जो मिलता है उसका समन्वय वेद में मिलता है । अतः लाखों लाख समन्वयकारी सूत्रों को देखकर पता लगता है कि जिस परमेश्वर ने संसार बनाया है उसी ने वेद बनाये हैं ।

उदाहरण के लिए वेद में वर्णन आता है कि मनुष्य को अनृत, असत्य और दुराचार में परमेश्वर ने अश्रद्धा उत्पन्न कर दी है । सत्य, परोपकार और सदाचार में श्रद्धा पैदा कर दी है ।—'अश्रद्धां, अनृते दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः' । भगवान ने बुरे कामों में अश्रद्धा और अच्छे कामों में श्रद्धा पैदा की है । ऐसे लाखों नियम संसार में मिलते हैं । इससे पता लगता है कि संसार की रचना, पालन और प्रलय आदि करने वाला परमेश्वर हैं'।

ईशावास्यम्
पी-३०, कालिन्दी
कोलकाता-७०००८९

फोन (०३३) २५२२२६३६
चलभाष : ०९४३२३०१६०२

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय की नवीनकृति प्रकाशित

'मातृभूमि वैभवम् पृथिवी सूक्त विमर्श'

मूल्य : १२५) रुपये मात्र

प्रकाशक : आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-६

स्थापना दिवस :

आर्य समाज : अंगारे पर घेरती राख

– प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

भारतवर्ष के इतिहास में १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में नव-जागरण का आरंभ होता है । ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज आदि कई सामाजिक सुधार और जनजागरण करने के संगठन बने । बंगाल में ब्राह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय अधिक प्रभावशाली प्रमाणित हुए । उन्होंने स्त्रियों की दशा सुधारने, सती प्रथा आदि रोकने का प्रशंसनीय कार्य किया । ब्राह्म समाज की निर्बलता यह थी कि राजा राममोहन राय अंग्रेजी शासन और अंग्रेजी भाषा को भारतवर्ष की उन्नति के लिए आवश्यक समझते थे । इसका फल यह हुआ कि ब्राह्म समाज भारत के साधारण जनों की मानसिकता को अपने प्रभाव में न ले सका क्योंकि इसका प्रेरक तत्व विदेशी था ।

ब्राह्म समाज के कुछ वर्षों के पश्चात् सन् १८७५ ईस्वी में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को स्वामी दयानंद सरस्वती ने मुबंई में आर्य समाज की स्थापना की । स्वामी दयानंद और आर्य समाज की चिंतनधारा वेद, शास्त्र, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवान श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण आदि भारतीय ऐतिहासिक विरासत का प्रचार करने लगी । आर्य समाज सुधार की वाणी बोलता था किन्तु इसकी कार्यशैली में बहुआयामी तथा बहुमुखी क्रांति का शंखनाद था । यह वैचारिक क्रांति दैवी ज्वाला की तरह भारतवर्ष में तथा भारतवर्ष के बाहर यूरोप, अमरीका, कनाडा, अरब, अफ्रीका आदि में फैल गयी । अमरीका के प्रसिद्ध विचारक डॉ. एंड्रयू जैक्शन डेविस ने कहा है—'मैं एक ऐसी अग्नि को देखता हूँ जो सर्वव्यापक हैं, वह अप्रमेय प्रेम की अग्नि है, जो सर्वविद्वेष के भस्मसात करने के लिए प्रज्ज्वलित हो रही है । वाग्मियों, कवियों और पवित्र पुस्तक—प्रणेताओं के मनोभावों के रूप में उसकी लपकती ज्वालाएं यत्र-तत्र दृष्टिगोचर हो रही हैं । आर्य समाज नामक अग्निकुंड में यह अग्नि प्रकट हुई है । ईश्वर के प्रकाश से ज्योति प्राप्त करने वाले स्वामी दयानंद सरस्वती के हृदय में यह अग्नि प्रादुर्भूत और प्रज्ज्वलित हुई थी । हिंदू, मुसलमान और ईसाई, सब इस अग्नि को बुझाने के लिए दौड़े किंतु यह स्वर्गीय अग्नि भारतवर्ष में और भारतवर्ष के बाहर भी बढ़ती और फैलती ही गयी ।' उस समय भारतवर्ष में म्यांमार (बर्मा), सिंगापुर, इंडोनेशिया आदि सब में यह सुधार की ज्वाला फैल गयी । इस समय संसार के प्रायः सभी देशों में और प्रमुख शहरों में आर्य समाज का संगठन कार्य कर रहा है ।

अफ्रीका के कई देशों में, टापुओं में, मारीशस, फिजी, गुआना, केन्या आदि में जहाँ भारतीय मूल के लोग बसे हैं, वहां आर्य समाज अत्यन्त प्रभावपूर्ण धार्मिक और सामाजिक कार्य कर रहा है । आर्य समाज के प्रभाव में इस्लामी जगत् भी इतनी निष्ठा से सम्मिलित हुआ था कि खलीफाओं के देश के प्रसिद्ध नगर बगदाद के आर्य समाज ने उस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को एक

हजार रुपये सहयोग में दिया था, जिसका मूल्य आज के दिन लाखों का होगा और इन्हीं रुपयों से सार्वदेशिक सभा ने सन् १९२४ ईस्वी में आर्य पर्व-पद्धति पुस्तक छापी थी । यह तो अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति ने ईसाई और मुसलमानों को आर्य समाज का विरोधी बना दिया ।

आर्य समांज के कार्य बहुमुखी रहे हैं । समाज सुधार, छुआछूत को मिटाना, जातिगत, जन्मना, ऊंच-नीच के भाव को मिटाना, बालविवाह रोकना, विधवा विवाह को प्रोत्साहन देना, कन्याओं के लिए स्कूल, कालेज, गुरुकुल खोलना, अछूतों, जनजातियों आदि सभी पिछड़े हुए वर्गों को बिना किसी भेदभाव के स्कूल, कालेज और गुरुकुलों में स्थान देना, वेद-वेदांग आदि के अध्यापन के लिए गुरुकुल खोलना आदि सब आर्य समाज के प्रोग्राम में है । आर्य समाज ने म्रियमाण हिंदू जाति को संजीविनी बूटी पिला दी । आर्य समाज से पहले ईसाई मिशनरी और इस्लामिक प्रचारक हिंदू देवी-देवताओं की खुलेआम भर्त्सना करते थे और हिंदुओं को बिना किसी बाधा के धर्मान्तरित कर रहे थे । स्वामी दयानंद और आर्य समाज के प्रचारक हिंदुओं की रक्षा तो करने ही लगे, साथ ही अन्य मतावलंबियों को पुनः हिन्दू भी बनाने लगे । उस समय आर्य समाज जनमानस में अग्निपिंड की तरह दहक रहा था ।

आर्य समाज का विरोध : आर्य समाज के विरोध में कट्टरपंथी हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सभी टूट पड़े । आर्य समाज अंग्रेजी शासन, अंग्रेजी माध्यम, अंग्रेजी सभ्यता, संस्कृति, सबका विरोध करता था । अतः सबसे पहले अंग्रेजी सरकार ने आर्य समाज को दबाने का प्रयास किया । शासन की ओर से कई जगह कई अभियोग चलाये गये किंतु सर्वत्र आर्य समाज विजयी रहा । आर्य समाज ने कई धार्मिक युद्ध किये । निजाम हैदराबाद के शासक ने हिन्दुओं पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाये थे और अनेक प्रकार से हिंदुओं को वहां पीड़ित किया जाता था ।

१९३७ में आर्य समाज ने निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह किया और कई सत्याग्रहियों के बलिदान के पश्चात् निजाम सरकार ने घुटने टेक दिये और निजाम हैदराबाद के राज्य में हिंदुओं को धार्मिक अधिकार प्राप्त हुए । इस विजय से आर्य समाज की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी । १९४७ के स्वतंत्रता के समय सिंध प्रांत में मुस्लिम लीगी सरकार थी । उसने स्वामी दयानंद के ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की ।

इस पर आर्य समाज ने सिंध सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह करने का निश्चय किया । इससे सिंध की लीगी सरकार घबरा उठी और उसने प्रतिबंध का आदेश वापस ले लिया । इससे भी आर्य समाज का गौरव बढ़ गया । स्वतंत्र भारत में नेहरू जी की प्रेरणा से पंजाब में कैरो सरकार ने हिंदी भाषा के विरुद्ध प्रतिबंध लगाया और आर्य समाज ने हिंदी रक्षा आंदोलन छेड़कर सत्याग्रह किया । इसमें भी आर्य समाज सफल रहा । ये सब बाहरी विरोध थे । इन्हें आर्य समाज ने बड़े उत्साह से दबा दिया ।

आंतरिक प्रतिकूलता : (१) बाहरी विरोधों को लड़कर दबाया जाता है किंतु आंतरिक प्रतिकूलताएं दीर्घकालिक प्रभाव डालती हैं । कांग्रेस के प्रसिद्ध इतिहासकार लेखक पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय कांग्रेस में लगभग ८० प्रतिशत लोग आर्य समाज से प्रभावित

थे । उस समय देश को प्रांतीय और केन्द्रीय सरकारें बनाने के लिए तपे-तपाये ईमानदार देश-सेवक नेताओं की आवश्यकता थी । इस प्रशासनिक आवश्यकता ने आर्य समाज के प्रथम कोटि के बहुत सारे नेताओं को सरकार में ले लिया । इतनी बड़ी संख्या में प्रथम कोटि के कार्यकर्त्ताओं का शासन द्वारा अपहरण (हाई जैक) किये जाने ने आर्य समाज संगठन पर आंतरिक राख का काम किया और आर्य समाज के अंगारे पर मलिनता का प्रभाव डाला । (२) नकली सिक्के असली मूल्यवान् सिक्कों को प्रचलन से हटा देते हैं । आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का देश में बड़ा सम्मान था । न्यायालय भी कई बार आर्य समाजियों की सच्चाई, ईमानदारी पर मुहर लगा देते थे । इस सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रलोभन में कई नकली दिखावटी नेता आर्य समाज के नेतृत्व में घुस आये । आर्य समाज अत्यन्त जनतांत्रिक संगठन हैं और ये दिखावटी आर्य समाजी आर्य समाज के संगठन पर हावी होकर अधिकार में आ गए । इसने भी आर्य समाज के तेज को धूमिल किया । (३) त्यागी, संन्यासी, विद्वान, समाज-सेवक अधिकारियों की जगह स्वार्थी, पद-लोलुप लोगों का समाज पर आधिपत्य बढ़ने लगा । (४) दलबंदी की दलदल में आर्य समाज का संगठन फँस गया । जब दलबंदी सीमारेखा पार कर जाती है तब संगठन् अपने मूल उद्देश्य से भटक कर स्वार्थों में उलझ जाता है । इसी में संगठन का वर्चस्व धूमिल हो जाता है । (५) सेवा करने की जगह मेवा-भोगी कार्यकर्त्ता, नेता कुर्सी-चिपकू बन कर संगठन को अपने निजी स्वार्थों में, निजी प्रतिष्ठा में भुनाने लगते हैं । (६) कहीं-कहीं समाज की अचल संपत्तियों को बेचकर तथा आर्य समाज के भवनों, अतिथिशालाओं आदि का आर्थिक रूप से दुरुपयोग करने वाले कई लोग संगठन में प्रभावी हो गये हैं । (७) सबसे बढ़कर तेजस्वी नेतृत्व का अभाव आर्य समाज रूपी अंगारे पर राख चढ़ा रहा है ।

इतनी सारी प्रतिकूल परिस्थितियों के रहने पर भी एक स्वर्णिम किरण से यह आशा दिखती है कि दो-चार सौ नियंत्रण करने वाले नेताओं को छोड़कर लगभग सारा आर्य समाज संगठन ऋषि दयानंद और उनके सिद्धांतों के प्रति ईमानदारी से निष्ठावान् हैं ।

ईशावास्यम्
पी-३०, कालिन्दी
कोलकाता-७०००८९

फोन (०३३) २५२२२६३६
चलभाष : ०९४३२३०१६०२

आवश्यकता

आर्य समाज मॉडल टाऊन, यमुना नगर (हरियाणा) में एक सेवक की आवश्यकता है । प्रार्थी को किसी प्रकार का दुर्व्यसन जैसे मदिरापान, धूम्रपान आदि नहीं होना चाहिये और वह शाकाहारी हो । आर्य समाज में ही सेवक के लिए रहने की व्यवस्था है । मासिक वेतन चार हजार रुपये है । सेवक शिक्षित व विवाहित और धार्मिक वृत्ति का होना चाहिए ।

सम्पर्क सूत्र : प्रधान रमेश पाहूजा, मोब. : ९८९६९-२०३८८

तुलनात्मक अध्ययन विषयक साहित्य

डॉ० भवानीलाल भारतीय

मुख्यतः भारत के धर्माचार्यों और समाज सुधारकों से ऋषि दयानन्द के विचारों और कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने में मेरी प्रारम्भ से ही रूचि रही। इसका कारण था इस विषय पर पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति के वे लेख जो सार्वदेशिक आदि पत्रों में छपते थे। इसी रुचि तथा मेरे स्वतंत्र अध्ययन के आधार पर मैंने एक लघु पुस्तक 'ऋषि दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य' शीर्षक १९४९ में लिखी। इसी वर्ष मैंने एम. ए. पास किया था। जब पुस्तक तैयार हो गई तो उसे छपाने की समस्या आई। मैंने आर्य समाज (नगर) जोधपुर से निवेदन किया कि वे इस ट्रैक्ट को प्रकाशित करा दें। अधिकारियों ने मेरी पाण्डुलिपि को नगर के प्रतिष्ठित, स्वाध्यायशील पं० पन्ना लाल परिहार (अधीक्षक राजकीय अद्भुतालय व इतिहास) के पास सम्मति हेतु भेजा। उक्त महानुभाव ने इसे आद्योपान्त पढ़कर अनुकूल सम्मति दी तथा छपाने की संस्तुति कर दी। उन्होंने इसे प्रकाशन योग्य ठहराया था।

आर्यसमाज ने इसके मुद्रण का आनुमानिक व्यय ज्ञात किया और जब यह व्यय लगभग पचास रुपए बताया गया तो आर्यसमाज के अधिकारियों ने मुझे अपनी ओर से बीस रुपये देने और अवशिष्ट तीस रुपए समाज से देने की अनुज्ञा दी। उस समय मैं मामूली वेतन पर एक हाई स्कूल में सहायक अध्यापक था। तथापि येन केन प्रकारेण बीस रुपए जुटाये और न्यूज प्रिंट पेपर पर मेरी यह प्रथम रचना २००६ वि० में छपी। इसमें ऋषि दयानन्द के साथ महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुजादि वैष्णव आचार्य, कबीर आदि संतों तथा राजा राममोहन राय , केशवसेन विवेकानन्द आदि की वैचारिक दृष्टि से तुलना की गई है। कई पत्रों में इसकी समीक्षाएं छपीं। यहाँ तक कि भारत सरकार के मासिक पत्र 'आजकल' में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी मन्मथनाथ गुप्त ने इस छोटे से ट्रैक्ट पर टिप्पणी लिखी। मेरी यह प्रथम रचना कलकत्ता के आर्य नेता श्री आनन्द कुमार आर्य को इतनी पसन्द आई कि पचास वर्ष बाद २००२ ई० में उन्होंने इसे आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल से पुनः प्रकाशित किया।

तुलनात्मक अध्ययन में मेरी रूचि निरंतर बढ़ती रही। मैंने योजना बनाई कि ऋषि की तुलना विभिन्न भारतीय धर्माचार्यों से विस्तृत रूप में की जाये। इस योजना में सर्वप्रथम ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय तथा दयानन्द की तुलना को लिया। अपने विद्यालय के पुस्तकालय में मुझे पाणिनि आफिस इलाहाबाद से छपी 'कम्पलीट इंग्लिश वर्क्स ऑफ राजा राममोहन राय' पुस्तक मिली। इसमें राजा महोदय के सभी अंग्रेजी ग्रंथ संग्रहीत थे। मैंने इसे पढ़कर आवश्यक नोट्स लिए। इस अध्ययन से पता चला कि राजा राममोहन राय यद्यपि ईसाई मिशनरियों के द्वारा किये जाने वाले प्रचार कार्य से तो सहमत नहीं थे किन्तु वे ईसाई मत के नैतिक एवं आचार-मूलक सिद्धान्तों के परम प्रशंसक थे। वे

ईसाइयत में स्वीकृत त्रित्ववाद (Trinity), पिता, पुत्र तथा पवित्रात्मा) से भी सहमत नहीं थे तथा मूलतः ईसाई मत को यूनीटेरियन (एकेश्वरवादी) मानते थे। मैंने इस अध्ययन के आधार पर दयानन्द और राममोहन राय की तुलना पर एक ग्रंथ तैयार कर लिया। अब इसके प्रकाशन की समस्या थी। आगरा के एक पुस्तक प्रकाशक आर्यप्रकाश पुस्तकालय के मालिक पं० मुंशीराम शर्मा प्रायः जोधपुर आर्यसमाज के सालाना जलसों पर आते थे। उनसे मेरा परिचय था। उन्होंने इसे छापने की इच्छा जाहिर की और १९५७ में मेरा यह ग्रंथ 'महर्षि दयानन्द और राजा राममोहन राय : तुलनात्मक अध्ययन' छपा इसके प्रूफशोधन में भरपूर प्रमाद बरता गया था। लेखक को प्रूफ देखने का अवसर नहीं दिया गया तथापि यह ग्रंथ अपने विषय की प्रथम कृति थी। इसमें दोनों महापुरुषों के धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय विचारों की तुलनात्मक समीक्षा की गई थी।

यदि इसका संशोधितसंस्करण प्रकाशित होता तो सम्भवतः यह अपने विषय की अपूर्व पुस्तक होती। जब मैंने इस पुस्तक को राजस्थान के प्रख्यात इतिहासकार और आर्यप्रतिनिधि राजस्थान के विगत प्रधान डॉ० मथुरालाल शर्मा को समत्यर्थ भेंट किया तो इसे देखकर उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि मुझे उनके मार्गदर्शन में पी० एच०डी० करनी चाहिए। मेरी कठिनाई यह थी कि मैं साहित्य (हिन्दी-संस्कृत) का छात्र था जबकि डॉ० शर्मा इतिहास विषयक शोधकार्य के मार्गदर्शक के लिए अधिकृत थे। बादमें इस तुलनात्मक अध्ययन के एक दो सोपानों पर चढ़ना ही मेरे लिए सम्भव हो सका। सायण एवं दयानन्द के वेद विषयक विचारों की तुलना के कुछ लेख मैंने लिखे। पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय का 'सायण और दयानन्द' इस विषय की प्रमाणिक रचना है।

मैंने ब्रह्मसमाज के इतिहास के द्वितीय नेता एवं आचार्य देवेन्द्रनाथ ठाकुर (महाकवि रवीन्द्रनाथ के पिता) तथा तृतीय नेता (ईसाइयत से प्रभावित) केशवचन्द्र सेन के विचारों का अध्ययन किया। इनका तुलनात्मक अध्ययन भी कुछ लेखों तक ही सीमित रहा। तदन्तर स्वामी विवेकानन्द के सम्पूर्ण साहित्य का गहराई से अनुशीलन कर विस्तृत नोट्स लिए। रामकृष्ण आश्रम धन्तोली नागपुर ने सम्पूर्ण विवेकानन्द साहित्य का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया है। इसका अध्ययन ही मेरे दयानन्द एवं विवेकानन्द विषयक तुलनात्मक अध्ययन का आधार है। अभी मैं इस ग्रंथ के चार अध्याय ही लिख पाया था कि प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु ने इन्हें आर्य युवक समाज अबोहर (पंजाब) से १९७२ में प्रकाशित करा दिया। तत्पश्चात् मैंने अगले दो तीन वर्षों में कुल सोलह अध्याय लिखकर इसे पूरा किया। १९७५ में इसे वैदिक यंत्रालय अजमेर ने प्रकाशित किया और अगले वर्ष १९७६ में इस पर मुझे पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मारक साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द के धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय विचारों का इतना सटीक, विश्लेषण-प्रधान विचार ऋषि दयानन्द के विचारों की तुलना के साथ इससे पूर्व नहीं किया गया था। मैंने सुना है कि स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा के पोषक आर०एस०एस०

की विचारधारा को मानने वाले पूर्वाग्रही मनोवृत्ति वाले लोग मेरी इस पुस्तक से खफा हैं क्योंकि इससे विवेकानन्द के चिन्तन का परस्पर विरुद्धवाद (Self Contradiction) तथा उनके अन्य विचारों की कमियां उजागर होती हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे लाला रामगोपाल शालवाले को यह ग्रंथ इतना पसन्द आया कि उन्होंने उक्त सभा से इसे दो-तीन बार प्रकाशित करवाया। इसका एक विशिष्ट परिवर्द्धित संस्करण स्व० चौधरी मित्रसेन जी ने प्रकाशित किया। उड़िया भाषा में इसका अनुवाद रामनाथ पटनायक ने किया जो भुवनेश्वर से १९९४ में प्रकाशित हुआ।

स्वामी विवेकानन्द के विचारों की ट्रेजेडी इस तथ्य को लेकर है कि उनके चिन्तन में एकरूपता तथा एकतानता (Consistency) का सर्वत्र अभाव है। उनके सभी विचार परस्पर विरुद्धवाद (आत्मविरोध) से ग्रस्त हैं। वे एक स्थान पर वेदों की प्रशंसा करते हैं अन्यत्र उनकी निंदा करते हैं। यदि एक प्रसंग में मूर्तिपूजा की प्रशंसा करते हैं तो किसी अन्य प्रसंग में उसकी कटु आलोचना करते हैं। एक ग्रंथ में मांसाहार को उचित बताते हैं तो अन्यत्र उसे निंदनीय कहते हैं। सर्वोपरि बात तो यह है कि वे उन सामाजिक सुधारों की कठोर आलोचना करते हैं जिनके लिए राममोहनराय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा दयानन्द जैसे समाज सुधारक प्रतिबद्ध रहे थे। इस आलोचना में विवेकानन्द की जो मानसिकता तथा आन्तरिक कुण्ठा रही है उसका सटीक विश्लेषण मैंने अपने इस ग्रंथ में किया है।

दयानन्द और विवेकानन्द के विचारों व व्यक्तित्व की गहराई में जाकर तुलनात्मक समीक्षा संभवतः प्रथम बार की गई है। यदि इस ग्रंथ का अंग्रेजी अनुवाद हो जाये तो विवेकानन्द के उन लाखों अंधभक्तों की आंखें खुल जायेंगी जो इस महापुरुष का एकांगी अध्ययन करते हैं। तथापि मेरी दृष्टि स्वामी विवेकानन्द के वैचारिक पक्ष के श्लाघनीय शुक्ल पक्ष को उजागर करने में कहीं कृपणता नहीं रखती। उनके इन विचारों की मैंने सर्वत्र प्रशंसा की है।

८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

पं० रूपचंद 'दीपक' को पत्नी-शोक

आर्य सगत् के सुपरिचित विद्वान् एवं आर्य समाज शृगारनगर, लखनऊ के प्रधान पं० रूपचन्द्र 'दीपक' की धर्मपत्नी श्रीमती राकेश रानी (आयु ५५ वर्ष) का २७ फरवरी २०१३ को निधन हो गया। वे एक मास पूर्व सड़क दुर्घटना में घायल हो गया थीं।

यजुष-साम-विमर्श

–प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

सम्पादक-डा० सोमदेव शास्त्री

प्रकाशक–वैदिक मिशन मुम्बई , ३०९, मिल्टन अपार्टमेंट, जुहू कोलिवाड़ा, मुम्बई-४०००४९ पृष्ठ–२३८ मूल्य–१००) सौ रुपये

डा० सोमदेव शास्त्री के प्रयास से वैदिक मिशन मुम्बई ने पिछले ६—७ वर्षों में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में बहुत उत्साहवर्धक और प्रशंसनीय कार्य किया है। इन्होंने कई गोष्ठियों, सम्मेलनों आदि का आयोजन कराया है—(१) वेदों में सामाजिक संगठन और याज्ञिक प्रक्रिया। (२) अखिल भारतीय आर्य पुरोहित सम्मेलन (३) आर्य भजनोपदेशक परिषद (४) आर्य महिला उपदेशिका सम्मेलन इत्यादि।

इसी सिलसिले में यजुष्-साम-विमर्श पुस्तक प्रकाशित की गयी है। इस संकलन में अखिल भारतीय स्तर के तीस विद्वानों के लेखों का संग्रह प्रकाशित किया गया है। सभी लेख पठनीय और संग्रहणीय हैं। जिन स्वाध्यायशील व्यक्तियों को वेदों के सम्बन्ध में रुचि है उनके लिये इस पुस्तक को पढ़ने की अनुशंसा हम कर सकते हैं। सारे ही लेख अपनी-अपनी विशेषता लिए हुए हैं।

पुस्तक का कागज, मुद्रण, प्रूफ रीडिंग सभी उत्तम कोटि की है। इस दृष्टि से पुस्तक का मूल्य प्रचारार्थ ही बहुत कम लगता है। हम वैदिक मिशन मुम्बई और आदरणीय विद्वान् डा० सोमदेव शास्त्री को बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी इसी प्रकार वेद धर्म प्रचार के कार्य में प्रशंसनीय योगदान करते रहेंगे।

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत का तेईसवाँ वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत के तेईसवें वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार का दिनांक २५, २६, २७ मई २०१३ शनिवार, रविवार, सोमवार को आयोजन किया गया है इस अवसर पर नये विद्यार्थियों को गुरुकुल में प्रवश दिया जायेगा। पाँच कक्षा पास लगभग १०-११ वर्ष की आयु के विद्यार्थी गुरुकुल में प्रवेश पा सकेंगे, पंचम कक्षा पास विद्यार्थियों की लिखित परीक्षा ली जायेगी, परीक्षा में पास होने वाले विद्यार्थी को ही प्रवेश दिया जायेगा। इसलिये जो सज्जन अपने पुत्रों को चरित्रवान् एवं सुयोग्य विद्वान् बनाना चाहते हैं, वे गुरुकुल में प्रवेश दिलाने हेतु अपने पुत्रों को साथ लेकर इस समारोह में पधारें। पांचवो कक्षा का प्रमाण पत्र साथ लावें।

(१) निःशुल्क आवास व शिक्षा व्यवस्था। (२) आर्ष पाठविधि से पढ़ाई जाने वाली शास्त्री आचार्य तक की शिक्षा। गुरुकुल झज्जर से सम्बन्धित शास्त्री एवं आचार्य उपाधि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) द्वारा प्रदान की जाती है। (३) कम्प्यूटर व्यवस्था—गुरुकुल में छात्रों को कम्प्यूटर की शिक्षा भी दी जाती है। विशेष :— महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्दिष्ट पाठविधि के द्वारा बिना परीक्षा के वर्णोच्चारण, शिक्षा से लेकर अष्टाध्यायी महाभाष्य तक पढ़कर संस्कृत के विद्वान् व्याकरणाचार्य बनने के इच्छुक जिज्ञासु ब्रह्मचारियों के लिये विद्वान् आचार्यों द्वारा गुरुकुल में निःशुल्क पढ़ाने की व्यवस्था है। इसमें प्रवेश के लिये छात्र का कम से कम कक्षा आठवीं पास होना अनिवार्य है।

अध्यक्ष : स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

''मोदी को प्रधानमन्त्री बनाना समय की मांग''

–श्री खुशहालचन्द्र आर्य

आज देश की जो शोचनीय व दयनीय स्थिति बनी हुई है, उससे उबरने के लिए किसी मजबूत दृढ़ निश्चयी, ईमानदार, चरित्रवान् व राष्ट्र भक्त व्यक्ति के प्रधानमन्त्री बनने की सख्त जरूरत है । यदि हम चारों तरफ नज़र घुमाकर देखें तो सब पार्टियों में, चाहे वह काँग्रेस हो, सपा हो, बसपा हो, राजद हो, तृणमूल हो, सी०पी० आई० हो या अन्य कोई पार्टी हो, इन सब में बी. जे. पी. (भाजपा) का नरेन्द्र मोदी ही एक ऐसा व्यक्तित्व है जो इस समय की स्थिति को सम्भाल सकता है । कारण इसमें ऊपर लिखे सभी गुण हैं । दुःख का विषय तो यह है कि स्वयं बी.जे.पी. के शीर्ष नेतागण ही परस्पर के विरोध तथा अपने स्वार्थ में ही फँसे हुए हैं । उसके सभी शीर्ष नेता अपने आप को प्रधानमन्त्री पद के योग्य समझते हैं । चाहे वह लालकृष्ण आडवाणी हों, सुषमा स्वराज हों, अरूण जेटली हो अथवा अन्य कोई नेता हो । इस पर भी खुशी की बात यह है कि बी.जे.पी के कुछ नेताओं ने नरेन्द्र मोदी के पक्ष में भी आवाज उठाई है, जिनमें विशेष कर यशवन्त सिन्हा ने जो खुलकर नरेन्द्र मोदी के पक्ष में बोला है, साथ ही राजनाथ सिंह जो पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, उसने भी मोदी को इस पद के योग्य बताया है । ये देश के सौभाग्य के लक्षण है । कारण आज भारत की आम जनता नरेन्द्र मोदी को ही सबसे अधिक चाहती है । यहाँ तक कि काँग्रेस और सी.पी.एम. तक के विचारवान् व राष्ट्रभक्त व्यक्ति, देश में सुशासन आवे, इस विचार से नरेन्द्र मोदी को ही देश का प्रधानमन्त्री देखना चाहते हैं । ऐसी स्थिति में बी. जे.पी के सब नेताओं को अपना व्यक्तिगत स्वार्थ छोड़कर, राष्ट्र और पार्टी का हित सोच कर मोदी को आगे लाना चाहिए ।

मैं अपने बी.जे.पी. के सभी नेताओं से विनम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि वे यदि नरेन्द्र मोदी को छोड़कर बी.जे. पी. के अन्य किसी भी नेता को प्रधान-मन्त्री का दावेदार बनायेंगे तो बी. जे. पी. किसी भी हालत में जीत नहीं पायेगी कारण पूरा हिन्दू समाज भी बी.जे. पी. के नाम से संगठित नहीं हो सकता जब कि नरेन्द्र मोदी के नाम से केवल पूरा हिन्दू समाज ही नहीं बल्कि राष्ट्रवादी मुसलमान व ईसाई भी संगठित हो सकते हैं । यदि बी.जे. पी. के सभी नेता इस २०१४ के लोकसभा चुनावों में संगठित होकर नरेन्द्र मोदी का नाम प्रधानमन्त्री का दावेदार नहीं घोषित किया तो वह तो इस चुनाव में हारेगी ही, फिर आगे भी किसी चुनाव में नहीं जीत सकेंगे कारण अगले चुनावों तक बी. जे.पी. के समर्थकों की संख्या कम होती जायेगी और अराष्ट्रीय तत्वों की संख्या बढ़ती जायेगी और देश कुछ ही वर्षों बाद पुनः गुलामी की जंज़ीरों में जकड़ दिया जायेगा । तब बी.जे.पी. को पछताने के सिवा और कोई चारा नहीं रहेगा । इसलिए इसके नेताओं की समझदारी इसी में है कि वे सब संगठित होकर,

जनता की आवाज को समझकर, अपना स्वार्थ छोड़कर नरेन्द्र मोदी को ही प्रधान-मन्त्री पद के लिये घोषित करके उसी के नेतृत्व में आगामी लोकसभा का चुनाव लड़कर जीत हासिल करें । विजय प्राप्ति के बाद बी.जे.पी. अपने साथियों के साथ कुशल शासन करते हुए जनता की अधिक से अधिक सेवा व भलाई करें जिससे आगे के चुनावों में भी इन्हीं की विजय सुरक्षित बनी रहे ।

यह बी.जे.पी. संगठन के लिए सौभाग्य की बात है कि उनके विजयी होने के कारण स्वयं ही बढ़ते जा रहे हैं । पहला कारण कांग्रेस अपना प्रधानमन्त्री का दावेदार राहुल गान्धी को घोषित करने जा रही है, जिसके ऊपर अधिकांश काँग्रेस वालों को ही उसकी योग्यता पर सन्देह है । मेरे विचार से मोदी के सामने वह बहुत कमजोर सिद्ध होगा । दूसरा कारण काँग्रेस व उसकी सहायक पार्टियों की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति बहुत अधिक बढ़ गई है जिससे भारतीय मुस्लिम नेताओं के उलट-पलट राष्ट्र विरोधी बयानों से हिन्दू समाज बहुत दुःखी है और उनमें संगठित होने की भावना बड़ी वेग से जागृत हो रही है । तीसरा कारण इधर में कुछ वर्षो से सभी हिन्दू संगठनों व साधु-सन्तों में गो-रक्षा की भावना बड़े जोरों से बढ़ी हुई है । वे अच्छी प्रकार से जानते हैं कि गो रक्षा बी.जे.पी. के राज्य में ही सम्भव है । यह सब कारण नरेन्द्र मोदी को जिताने में और काँग्रेस पक्ष को हराने में बड़े सहायक सिद्ध होंगे।

यदि सन् २०१४ के लोकसभा चुनावों में बी.जे पी. संगठन की ओर से नरेन्द्र मोदी और काँग्रेस संगठन की ओर से राहुल गान्धी प्रधानमन्त्री की दौड़ से शामिल होते हैं तो यह निश्चित है कि मोदी बहुत अच्छे वोटों से विजयी होंगे । यदि बी.जे.पी. ने किसी अन्य नेता को प्रधानमन्त्री का दावेदार मनोनीत कर दिया तो उसका जीतना असम्भव जान पड़ता है । कारण केवल नरेन्द्र मोदी ही अन्य पार्टियों के लोगों के वोट खींच सकता है और विजयी हो सकता है । मोदी के नाम से ही अधिकतर हिन्दू व सभी राष्ट्रीय मुसलमान एवं ईसाई जो देश के हित को अपना हित समझते हैं, ऐसे लोग एक मंच पर आकर नरेन्द्र मोदी को विजयी बना सकते हैं । हाँ ! यह बात ठीक है कि धर्मान्ध मुसलमान न तो मोदी को वोट देगा और न ही बी.जे.पी को वोट देगा । पर हर राष्ट्रीय भारतीय जो भारत की आज की दयनीय स्थिति से दुःखी है, वह चाहे किसी पार्टी का हो, चाहे किसी भी धर्म को मानने वाला हो, वह अपना वोट नरेन्द्र मोदी को ही देगा कारण हर देश-हितैषी व्यक्ति को मोदी ही एक आशा की किरण के रूप में दिखाई देता है, जो सत्य भी है ।

बी.जे.पी. के नेता कहते हैं कि मोदी के नाम से हमारी ही गठबन्धन की पार्टियाँ वोट नहीं देना चाहती—जैसे ज.द.(यू) जिसके अध्यक्ष शरद यादव हैं और प्रभावशाली नेता नितीश कुमार हैं । यह दोनों ही मोदी को नहीं चाहते । साथ ही शिव सेना वाले भी मोदी को नहीं चाहते हैं । ये उनके स्वार्थ का प्रश्न है न कि उनको मोदी की योग्यता में सन्देह है । यदि उनके वोट न देने से ५%परसेन्ट वोट कम आते हैं तो क्या हुआ । पर मोदी के नाम से २०% परसेन्ट अज्ञात वोट बढ़ते हैं जो केवल मोदी ही राष्ट्र की रक्षा कर सकता है, इस भावना से आयेंगे, इसलिए मोदी का जीतना निश्चित है । ये अज्ञात

वोट बी.जे.पी. के किसी अन्य नेता के खड़े होने से नहीं आयेंगे । इसीलिए नरेन्द्र मोदी का खड़ा होना ही देश के लिए हितकर है ।

बी.जे.पी. के नेताओं को यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि आम जनता पर बी.जे.पी. का इतना अधिक प्रभाव नहीं है जितना मोदी का व्यक्तिगत और उसके राष्ट्रवादी कार्यों का प्रभाव लोगों के दिलों में बैठा हुआ है । जनता जानती है कि इस विषम स्थिति में मोदी जैसा ईमानदार, देशभक्त, सख्त और दृढ़निश्चयी व्यक्ति ही देश को ,बचा सकता है अन्यथा देश का विनाश होना निश्चित ही दीखता है । मेरा भाजपा के शीर्ष नेताओं से विनम्र निवेदन है कि वे अपना व्यक्तिगत स्वार्थ छोड़कर देश व पार्टी के हित में इस उठी हुई लहर का लाभ उठाते हुए नरेन्द्र मोदी को ही लोकसभा चुनावों में चुनावों से काफी दिनों पहले प्रधानमन्त्री का दावेदार घोषित करके आगामी चुनावों में विजय प्राप्त करें । साथ ही मैं अपने राष्ट्रवादी मुस्लिम भाइयों से भी निवेदन करता हूँ कि वे काँग्रेस व अन्य पार्टियों ने बी.जे.पी. व नरेद्र मोदी के सम्बन्ध में जो भय बिठा रखा है कि ये साम्प्रदायिक हैं, ये केवल हिन्दुओं की संख्या है, इस भ्रम को मन से निकाल दें । बी.जे.पी और मोदी सभी देशभक्त भारतीयों को चाहते हैं । अराष्ट्रवादी चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान हो, उसको ये नहीं चाहते । आपने देखा होगा कि बी.जे.पी ने पिछले दिनों छः साल केन्द्र में राज्य किया तब देश की कितनी उन्नति हुई, चीजों के भाव कितने कन्ट्रोल में रहे तथा देश में कितनी शान्ति बनी रही । गुजरात में मुसलमान भाई पूर्ण सुखी हैं । मोदी के राज्य में उनको कोई कष्ट नहीं है, सो आप आप निःसंकोच व निर्भय होकर बी.जे.पी. के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी के पक्ष में वोट देकर और उसे भारत का प्रधानमन्त्री बनाकर देश को 'खुशहाल' बनावें ।

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इस वर्ष हुए इलाहाबाद में महाकुम्भ में देश के सभी भागों से बड़े-बड़े साधु, महात्मा, संन्यासी, तपस्वी आये हुए थे । बी.जे.पी. के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह तथा आर.एस-एस के प्रमुख श्री मोहन भगवत् भी उनसे मिले हैं । साधु-सन्तों ने नरेन्द्र मोदी को प्रधानमन्त्री बनाने तथा राममन्दिर को अयोध्या में उसी जगह बनाने का दृढ़ निश्चय किया है । इस प्रकार भारत भर में मोदी को प्रधानमन्त्री बनाने का प्रबल वातावरण बन गया है । देश का सौभाग्य बना रहा तो सन् २०१४ के लोकसभा चुनावों में बी.जे.पी. संगठन की विजय सुनिश्चित है । तब नरेन्द्र मोदी के हाथों में ही देश की बागडोर आवेगी, तभी भारत की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति का विकास होगा और भारत पुनः 'विश्वगुरू' बनेगा । ऐसी मेरी इच्छा है । ईश्वर मेरी तथा सभी राष्ट्रवादी भारतीयों की इच्छा अवश्य पूरी करेगा । ऐसी मुझे आशा है ।

गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स,

180, महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-700 007

दूरभाष :22183825 Office 26758903(R) (033) M. 9830135794

''ऋषि दयानन्द का जन्म दिवस''

– श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

वैसे भारत वर्ष में अनेक त्योहार होते हैं, पर कुछ दिवस अति महत्वधायी होते हैं । इसमें ऐसे ही दो अनुपम दिन है—एक 'महाशिव रात्रि' वह शुभ दिन है—जब बालक मूल शंकर 'सत्यान्वेषण की डगर पकड़कर' दयानन्द' सा देव बना ।

दूसरा वह शुभ दिन है जब वे १८२४ ई. में फाल्गुन माह की दशमी (कृष्णपक्ष) को गुजरात के जमींदार पिता कर्षण जी तिवारी और माता यशोदा बाई के आंगन में अवतरित हुए । वही आगे चलकर वेदज्ञ हुए और वेद ज्ञान से रहित भारत को उसके सत्यार्थ का दर्शन कराते रहे । उस समय भारत में घोर अविद्या अन्धकार छाया हुआ था, सांस्कृतिक तथा सामाजिक दशा बहुत खराब थी। तब सन् १८७५ ई० के पूर्व से ही भारत के महापुरुष ऋषि दयानन्द ने बहुत सुधार के कार्य किये तथा उन्होंने अंग्रेजों के चंगुल से मुक्ति पाने के लिये सबसे पहले यह मंत्र व्यक्त किया—''कोई कितना करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है । मत-मतान्तर के आग्ररहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है ।'' (स. प्र. अष्टम समु०)

सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का कथन है—''स्वामी जी ने स्वराज्य का सबसे पहले संदेश दिया'' लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा—''महर्षि दयानन्द महान् राष्ट्रनायक नेता और क्रान्तिकारी महापुरुष थे । '' यदि गाँधीजी राष्ट्रपिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह थे ।

अतः ऋषि के उसी विचार से प्रेरित होकर आर्यवीरों ने स्वतन्त्रता संग्राम में सर्वाधिक भाग लिया था तथा अनेकों आर्य अपने देश के प्रति शहीद हो गये थे ।

यहाँ कुछ उन आर्य पुरुषों का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिये बिदेशियों के हाथों निर्वासन यातनायें सहीं—(१) श्रीश्यामजी कृष्ण वर्मा (२) पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, (३) मदनलाल धींगड़ा, (४) हरदयाल एम. ए. (५—६) भाई अमीचन्द्र और अवधविहारी (७) भाई बाल मुकुन्द और उनकी पत्नी (८) भाई परमानन्द (९) सोहनलाल पाठक (१०) खुशीराम (११) जगतराम हरियानवी(१२) भगतसिंह (१३) सुखदेव (१४) बलराज भल्ला (१५) रणवीर (१६, १७, १८) राम प्रसाद विस्मिल, गेन्दालाल और रोशन सिंह (१९) यशपाल (२०, २१, २२) राजस्थान के कुंवर प्रतापसिंह, उनके पिता केसरी सिंह और दादा कृष्ण सिंह बारहट (२३) देवसुमन (२४) स्वामी श्रद्धानन्द और (२५) गया प्रसाद शुक्ला आदि इसके अलावा खुदीराम बसु, बिनय, बादल और दिनेश आदि हजारों शहीद हुए ।

नारियों में मातांगिनी हजरा, सरोजिनी नायडू, २८ वर्षीय आर्य युवती श्रीमती रामसखी और

दुर्गादेवी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

तात्पर्य यह है कि जिनके शिष्यों ने भारत देश के प्रति इतना कुछ किया उस ऐसे सत्योपदेशक ऋषि दयानन्द का भारत सरकार को जन्म दिवस (गुडफ्राइडे की तरह) अवश्य मनाना चाहिये ।

अतः जिन अंग्रेजों ने भारत को २०० वर्ष गुलाम बनाकर रक्खा और देश को कंगाल बना दिया तथा भारत छोड़ो स्वतन्त्रता सेनानियों पर जिन्होंने इतना अत्याचार और नरसंहार किया, उसी की भाषा और संस्कार को अपनाने तथा उन्हीं के धर्मगुरु ईसा मसीह का 'गुडफ्राइडे'अर्थात् जन्म दिवस जिस दिन मनाया जाता है उस दिन सभी सरकारी दफ्तर बन्द रहते हैं ।

महामानवों के इतिहास में ऋषि दयानन्द का भी नाम है, उन्हें भी अंत में समाज सुधार करते समय, एक निर्दयी, धर्म विरोधी ने विष दे दिया था ।

तात्पर्य यह कि जब भारत विदेशी 'ईसा' का 'गुडफ्राइडे' मनाता है तो देश भक्त ऋषि दयानन्द का जन्म दिवस राष्ट्रीय पर्व के रूप में क्यों नहीं मनाया जाता ?

दिसम्बर २०१२ के 'सत्य चक्र' में जगदीस लायलपुरी लिखते हैं कि—

''ईसा को उनके विरोधी लोगों ने क्रास पर कील ठांककर लटकाया, उन विरोधियों के लिये परमात्मा पुत्र ईसा ने परमात्मा से उनको माफ करने की विनती की । उन्हें नहीं पता था कि उनके अपने अनुयायी ईस्ट इण्डिया कम्पनी बनाकर भारत पर कब्जा करके लूटेंगे तथा जालियांवाला बाग में निर्दोष निहत्थों को गोलियों से भूनेंगे । क्या इसके लिये भी ईसा को परमात्मा से माफ करने की विनती करनी हुई होगी ?'

भारत धर्म निरपेक्ष राज्य है अर्थात् संसद में मंत्रीगण किसी धर्म के पक्ष में नहीं हैं, फिर भी वे लोग पितरपक्ष मनाते हैं । यह कैसी धर्म निरपेक्षता है ? गुजरात सरकार धर्मनिरपेक्षता का अर्थ केवल हम भारतवासी हैं, लगाया है ।

जब पं० बंगाल और उत्तर प्रदेश आदि राज्य सरकार मस्जिद के इमामों को वेतन दे रही है तो हिन्दुस्तान में—सनातनधर्म, वैदिकधर्म, सिखधर्म, बौद्धधर्म तथा जैनधर्म के मन्दिरों के पुजारियों-पुरोहितों को क्यों नहीं वेतन दिया जाता । क्या मस्जिद के इमामों को वेतन तथा आवास देने का कोई प्रावधान संविधान में है ?

अतः रामकृष्ण मिशन, विश्व हिन्दू परिषद, हिन्दू महासभा आदि को हाईकोर्ट में रिट दायर करनी चाहिये ।

इस सम्बन्ध में सभी मन्दिर के पुजारियों एवं पुरोहितों को एक जुट होकर विचार करना चाहिये।

सम्पर्क–मु० पो० मुरारई, जिला वीरभूम (पं० बंगाल)–७३१२१९

राष्ट्र-वन्दना

–श्री देवनारायण भारद्वाज

हे भोतृ भूमि ! हे पितृ धाम
प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।

विद्वान् जगें, शासक जागें, जो ब्रह्मतेज का प्रण पागें ।
जिनके बल, आयुध के द्वारा, अरि-प्रतिगामी डर कर भागें ।
अनुपम स्वदेश हो ख्यात् नाम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।

अन्नपूर्णा सुभग नारियाँ, सदा सुनायें प्रखर लोरियाँ ।
शिशु सभ्य युवा यजमान बनें, रोज ओज की पकड़ डोरियाँ ।
जो बढ़े विजय की ध्वजा थाम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।

गौ-वाणी-भू की रक्षा हो, जन पोषण और सुरक्षा हो ।
गतिमान अश्व बलवान् वृषभ, अभ्युदय श्रेय की शिक्षा हो ।
समृद्धि सिद्धि हो नगर-ग्राम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।

काम धेनु हों कल्पवृक्ष हों, सैनिकगण के सुदृढ़ वक्ष हों ।
शिल्पकार, गुरु श्रमिक-श्रेष्ठी, धर्मनिष्ठ कल्याण दक्ष हों ।
हो पवन प्रभा सुरभित ललाम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।

मृदु मेघ गगन में गहरायें, जो इच्छित जल को बरसायें ।
खेत भरें उद्यान हरे हों, शस्य श्यामला भूमि बनायें ।
कल यन्त्र-यान दें शुभ्र दाम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।

फलफूल अन्न औषधि उपजें, प्रासाद-कुटी सुखसाज सजें ।
हो ललित कला विज्ञान भला, उत्तम चरित्र के राग बजें ।
सब पायें नर विश्राम-काम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।

प्रभु योग क्षेम का वर्तन हों, सर्वत्र हर्ष-आकर्षण हो ।
निष्पक्ष एकता समता का, संगठन प्रेम सम्वर्द्धन हो ।
हे राष्ट्र रहो अभिराम-साम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।

'वरेण्यम', अवन्तिका (प्र.), रामघाट मार्ग, अलीगढ़

विश्व की सर्वश्रेष्ठ वरणीया प्रथमा संस्कृति-वैदिक-संस्कृति

– प्रो० ओम कुमार आर्य

आज संस्कृति के नाम पर जो कुछ किया जा रहा है उससे वास्तविक संस्कृति का दूर-दूर का भी कोई संबंध नहीं है । जैसे गंदे अश्लील कार्यक्रम, नृत्य, भौंड़ी, भद्दी प्रस्तुतियाँ, टी.वी. स्क्रीन या अन्य मञ्चों पर आयोजित, प्रचारित, प्रसारित तथा कथित सांस्कृतिक कार्यक्रम राजनेताओं के स्वागत सत्कार में प्रस्तुत किये जाने वाले युवक युवतियों के अत्यन्त कामुकता पूर्ण प्रोग्राम, चुलबुले हास परिहास, द्वि-अर्थी संवाद, चुटकुले बाजी आदि सब आज कला और संस्कृति के नाम पर बेशर्मी से परोसे जा रहे हैं जो कि इस देश की संस्कृति नहीं है, हाँ यह पाश्चात्य अप-संस्कृति की देन अवश्य हैं जो हमारी परम्पगत उदात्त संस्कृति, उच्च नैतिकता, जीवन विषयक, उच्च नैतिक मूल्य, सदाचार रिश्तों की पवित्रतादि पर घातक कुठाराघात करके हमें पूरी तरह नेस्तानाबूद करने पर तुले हैं, बहुत कुछ नुकसान तो पहले ही हो चुका है, जो बचा खुचा थोड़ा बहुत हमारे पास है वह भी हमारी उपेक्षा और उदासीनता के चलते नष्ट होने के कगार पर हैं । दुर्भाग्य तो यह है कि इस अपसंस्कृति का समर्थन और अंधा गुणगान करें तो सभ्य, उन्नत, प्रगतिशील, आधुनिक कहलायेंगे, अन्यथा गणना प्रतिगामियों, रूढ़िवादी, दकियानूसी, विकासवाद की दौड़ में बहुत पीछे छूटे हुये जीव जन्तुओं में होगी । यह आज प्रत्यक्षतः हमारे यहाँ हो रहा है, परिणामतः अप-संस्कृति फल फूल रही है और जो सत्य, सनातन, सर्व हित कारिणी, सर्वश्रेष्ठ वरणीया प्रथमा वैदिक संस्कृति है वह अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रही है, उसे पूछने वाला, उसके आंसू पोंछने वाला कहीं कोई दिखाई नहीं दे रहा है । इसे हमारा आलस्य कहें, घोर दुर्दिन कहें, नियति का क्रूर उपहास कहें, देश के कर्णधारों की गैरों से सांठगांठ और अपनों से विश्वासघात कहें, चाहे जो कहें, पर है यह कटु सत्य, हृदय को सालने वाला, मर्मान्तक पीड़ा पहुँचाने वाला दुःखद सत्य । आइये देखें कि वास्तविक, सच्ची संस्कृति क्या है ?

यह जान लेना भी आवश्यक है कि सभ्यता और संस्कृति में मूलभूत अन्तर है । बाहर की साज सज्जा, अच्छा पहनावा, व्यवहार कुशलतादि सभ्यता के अन्तर्गत आते हैं किन्तु आन्तरिक गुण जैसे विनम्रता, छोटे बड़ों का यथायोग्य मान-सम्मान, सेवाभाव, और कुल मिलाकर 'योग दर्शन' में उल्लिखित यम, नियम, 'मनुस्मृति' में बताये गये धर्म के दस लक्षणादि का जीवन में होना, ये सब 'संस्कृति' में आते हैं । सभ्यता बाह्योपचारों का नाम है जबकि संस्कृति अन्तःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) और आत्मा की शुचिता एवं सौन्दर्य का नाम है । सभ्यता भौतिक विकास की समानार्थी है जबकि आध्यात्मिक विकास और संस्कृति एक सिक्के के दो पहलू कहे जा सकते हैं । वैदिक संस्कृति इन्हीं अर्थों में सर्वश्रेष्ठ, सर्वहितकारिणी एवं वरणीया प्रथमा संस्कृति है कि वह भौतिक विकास का अंकुश लगाने की पक्षधर है, स्थूल जो बेलगाम होने पर अध्यात्म एवं आत्मिक विकास का अंकुश लगाने की पक्षधर हैं, स्थूल जो बेलगाम होंने पर निरा पशुबल, राक्षसी बल, आसुरी-बल बनकर रह जाता है, उस पर सूक्ष्म का नियंत्रण चाहती है ताकि वह विकास मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा रहे, ताकि वह विध्वंसोन्मुख (जैसा कि आज हम देख रहे हैं) न होकर निर्माणोंन्मुख बने, उसमें विसर्जन की दुष्प्रवृत्ति न होकर सर्जन की सत्प्रवृत्ति हो । इसीलिये उपनिषद ने 'भोग' पर 'त्याग' का ब्रेक लगाया 'तेन त्यक्तेन

भुञ्जीथाः' कहकर । प्रकृति के चंगुल में फंसकर बाह्य सुखोपभोग की सामग्री जुटाते जाना, इन्द्रियों की फरमायश पर उनकी तृप्ति हेतु नित नये आविष्कार करते रहना यह पाश्चात्य अप—संस्कृति का 'सुरसावाद' है, यही 'प्रेयमार्ग' है, यही धूममार्ग है जबकि वैदिक संस्कृति 'श्रेयमार्ग' अर्चिमार्ग अनुगामिनी है जिसका गंतव्य है इहलौकिक सुख, मानसिक शांति तथा परमानंद की अनुभूति ।

संस्कृति का स्वरूप भी समझ लें । कुछ मानते हैं कि किसी वर्ग, समूह, जाति या राष्ट्र विशेष की जीवन शैली का ही दूसरा नाम उसकी संस्कृति है । किसी 'वाद' विशेष या विचारधारा को भी कई बार संस्कृति कह दिया जाता है जैसे 'बन्दूक की संस्कृति' 'अहिंसा की संस्कृति' राजनीति में 'धन बल' 'भुजबल' की संस्कृति, इस प्रकार अन्य और भी संस्कृतियाँ हो सकती हैं, यथा डांस संस्कृति, होटल संस्कृति, क्लब संस्कृति आदि किन्तु यह संस्कृति न होकर किसी प्रवृत्ति विशेष का एक स्थानीय नाम ही कहा जायेगा जो कि समय और स्थान की सीमाओं में बंधा रहता है । संस्कृति इन सबसे परे है । आर्ष मान्यतानुसार संस्कारों का सारभूत रूप संस्कृति है, संस्कृति का भव्य भवन संस्कारों की सुदृढ़ नींव पर स्थित होता है । जिस सर्वश्रेष्ठ, वरणीया, प्रथमा संस्कृति को केन्द्र में रखकर यहाँ चर्चा की जा रही है उसका उल्लेख अग्रलिखित वेदमन्त्र में मिलता है—

ओ३म् आछिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।
सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रोऽग्निः ।।यजुर्वेद ७/१४

महर्षि दयानन्द ने अपने 'यजुर्वेद भाष्य' में इस मंत्र का भाष्य करते हुये 'संस्कृति' का अर्थ विद्या सुशिक्षा जनित नीति किया है और लिखा है कि सुयोग्य आचार्य विद्वान् अपने ब्रह्मचारियों को (सोम) नित्य योग और विद्यादान देकर उन्हें शारीरिक और आत्मबल से युक्त करें । जब महर्षि 'शारीरिक बल' के साथ-साथ आत्मबल पर भी जोर दे रहे हैं तब वस्तुतः वे अध्यात्म, और अन्तश्चेतना का ही महत्त्व समझा रहे होते हैं तथा उत्तम संस्कृति के निर्माण हेतु सुशिक्षा, योग, विद्यादि के माध्यम से उत्तम संस्कारों के संग्रह, संचय एवं अर्जन की महती आवश्यकता स्पष्ट कर रहे होते हैं । किसी देखी, सुनी घटना, किये गये क्रिया कलाप, कर्मकाण्ड, आयोजन, अनुष्ठानादि का हमारे मन पर जो प्रभाव अंकित होता है वही संस्कार कहलाता है, संस्कारों की समष्टिगत शृंखला का ही अभिधान संस्कृति है, जो एक दिन में नहीं, शनैः शनैः बना करती है । 'पञ्च महायज्ञ' विधान, पन्द्रह संस्कार और १६ वाँ अन्त्येष्टि कर्म, यज्ञोपवीत के माध्यम से 'ऋषि-ऋण' (Cultural heaitage), पितृ-ऋण (Race propageation), देव-ऋण (Cosmic Duties) आदि का 'दायित्व बोध,' व्यक्ति समाज, सृष्टिकर्ता और और उस द्वारा रचित समस्त समाज, सृष्टि के प्रति अपने कर्तव्य और प्रतिबद्धता को जान लेना आदि-आदि वह प्रक्रिया हैं जो उत्तम संस्कृति के निर्माण हेतु आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है । महर्षि द्वारा निर्दिष्ट उक्त मूलभावना को दृष्टिपथ में रखते हुये अन्य वैदिक विद्वानों ने इस मंत्र में वर्णित, प्रथमा विश्ववारा वैदिक संस्कृति की, जो वस्तुतः समूची मानवता की प्रथमा संस्कृति है, ये विशेतायें बतलाई हैं—

वैदिक संस्कृति वरणीया एवं स्वीकरणीया इसलिये है कि वह हमें यह सिखाती है कि हम सोम पिता से उत्तम बल, सबके पालन पोषण हेतु उत्तम धनैश्वर्य की प्रार्थना करें, अपने पुरुषार्थ इन्हें प्राप्त करें फिर सबके कल्याणार्थ इन्हें परोपकार हेतु प्रदान कर दें । उक्त मंत्र के आधार पर देखें तो वैदिक संस्कृति ही प्रथमा संस्कृति है जो—(१) आस्तिकवाद की संस्कृति है । (२) मानव मात्र को सभी दिव्य बलों से

युक्त करने वाली संस्कृति है (सुवीर्यस्य) (३) सबके समुचित भरण पोषण में विश्वास रखती है। (वायोस्पषस्य) (४) इसके अनुयायी सबके लिये मित्रवत् होते हैं अर्थात् सबका समानरूप से हित-सम्पादन करते हैं। (५) चूँकि सबका प्रिय करते हैं अतः अपने प्रिय आचरण से सबके लिये वरणीय चाहने योग्य होते हैं। (६) मानव मात्र को सर्वतोभावेन आगे ले जाने वाले होते हैं। चूँकि इस आर्यावर्त देश में यह संस्कृति फली-फूली और इसकी कोख से ऐसे वेदज्ञ, मानवतावादी विप्र उत्पन्न हुये जो सारे विश्व को सुन्दर आचरण, सद्व्यवहार, मानवोचित सदगुणों की शिक्षा देने में सक्षम थे, इसीलिये तो मनु महाराज ने हिमाद्रि के उत्तुंग श्रृंगों पर से उद्घोष किया था कि—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवा ।।

वेद के शब्दों में वे संस्कृति के निर्माता, उन्नायक ध्वजवाहक महामानव विश्वास पूर्वक कह सकते थे कि सभी विद्वज्जन ध्यान से सुनें कि वेदज्ञान से अपने मन और वाणी को संयुक्त करके हम किन उच्च शिखरों पर आसीन हैं—

श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः ।। ऋग्वेद १०.१३.१.

जिसका तात्पर्य यह है कि वेद की संस्कृति ही हमें गगनचुम्बी ऊंचाईयों तक ले जा सकती है क्योंकि यह—मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् (ऋ० १०.५३.६) की संस्कृति है।

अतः कहा जा सकता है कि मध्यकालीन अज्ञान, अंधकार के चलते उत्पन्न हुये नाना मत पंथों की तथा-कथित संस्कृति अर्वाचीन तथा-कथित गुरूओं द्वारा आविष्कृत नामदानी, चरणपुजाऊ, गुरुडमवादी भेड़िया-धसान संस्कृति ये सब मनुष्य को पतन के गर्त में धकेलने वाली संस्कृतियाँ हैं। विश्व का कल्याण चाहने वाली, समस्त विश्व को बिना किसी भेदभाव के सब प्रकार की उत्तम शक्तियाँ, सम्पन्नता, भरण-पोषण के साधन, समान विकास के अवसर प्रदान करके इहलौकिक सुख और पारलौकिक आनन्द देने में पूर्णतया समर्थ यदि कोई संस्कृति है तो वह है विश्व की प्रथमा, वरणीया वैदिक संस्कृति। आइये हम मंत्र का भावार्थ काव्य में समझें—

सोम पिता के गुण गाना, प्रथमा संस्कृति मानव की
रक्षण, पोषण गुण अपनाना, प्रथमा संस्कृति मानव की
दानशीलता, परोपकार, प्रथमा संस्कृति मानव की
सादा जीवन उच्च विचार, प्रथमा संस्कृति मानव की
सारी वसुधा इक परिवार, प्रथमा संस्कृति मानव की
सच पूछो तो जगती का कल्याण इसी से संभव है
स्वस्थ, सुखी और शांत विश्व का निर्माण इसी से संभव है
पीड़ित, शोषित, दुःखी जन का त्राण इसी से संभव है।

हमें चाहिये कि हम जागें, उठें, तत्परता से आगे बढ़ें, अपनी पावन संस्कृति को अपसंस्कृति के आक्रमण से बचायें। अपनी युवापीढ़ी को भ्रमित होने से बचायें, प्रयत्न पूर्वक सुनिश्चित करें कि अपने देश, अपने धर्म, अपनी संस्कृति का भविष्य समुज्ज्वल हों।

संपर्क सूत्र—१६०/७, जवाहर नगर, पटियाला चौक, जीन्द १२६१०२ (हरयाणा)
दूरभाष : ०९४१६२९४३४७, ०१६८१-२२६१४७

एक वह दिन–एक यह रात

श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य

आज से ४० साल पहले १६ दिसम्बर १९७१ को एक वह दिन था, जब भारत-पाक युद्ध के दौरान भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को बुरी तरह परास्त कर न सिर्फ पाकिस्तान के दो टुकड़े करवा दिये, बल्कि भारतीय सेना के लेफ्टीनेंट जेनरल जे. एस. अरोड़ा ने पाकिस्तानी सेना के लेफ्टीनेंट जेनरल के. एम. नियाजी को पाकिस्तानी सेना के ९० हजार सैनिकों को आर्म्स के साथ ढाका में आत्म समर्पण भी करवा दिया। इस अविस्मरणीय एवं गौरवशाली उपलब्धि से प्रत्येक भारतीय का सिर गर्व से ऊँचा हो गया।

एक यह घटना जब १६ दिसम्बर २०१२ की रात दिल्ली में चलती बस में २३ वर्षीय एक छात्रा 'दामिनी' के साथ ६ दरिन्दों ने बलात्कार कर मरणासन्न स्थिति में उसे सड़क पर फेंक दिया, जहाँ १४ दिन इलाज के दरम्यान अन्ततः वो मर गई। इस दूसरी घटना ने प्रत्येक भारतीय का सिर शर्म से नीचा कर दिया।

'दामिनी' मर तो गई पर एक प्रश्न पूरे देश के सामने छोड़ गई कि आखिर उसकी मौत का जिम्मेदार कौन ? हमें इसका जबाब ढूंढना है। क्या उसकी मौत के जिम्मेदार मात्र वे दरिन्दे हैं, नहीं हम सब हैं, पूरा देश है, यहाँ की प्रशासनिक और पुलिस व्यवस्था भी, जो इस कुकृत्य को रोक पाने में विफल रही, यहाँ का कानून और न्यायिक व्यवस्था भी जहाँ अपराधियों में कानून का कोई भय नहीं होता।

बलात्कार की यह कोई पहली घटना नहीं है,इस देश में प्रत्येक २० मिनट में एक बलात्कार होता है। इस घटना के बाद भी देश के विभिन्न हिस्सों में अनेकों बलात्कार की घटना हो चुकी है। रेप और गैंगरेप के लगभग ५८,००० से भी अधिक मामले विभिन्न न्यायालयों के समक्ष विचाराधीन है, जबकि रेप के अधिकांश मामले लज्जा और समाज के भय से छिपा लिये जाते हैं।

इस शर्मनाक घटना ने पूरे देश के जनमानस को झकझोर दिया है तभी तो लोग सड़कों पर उद्वेलित हो सरकार से दोषियों के लिए कड़ी सजा की माँग कर रहे हैं। हमें भी इनका समाधान ढूंढ़ना है, और समाधान ढंढ़ने से पहले हमें कारण ढूंढ़ना होगा तभी समाधान ढूंढा जा सकेगा। हमारी समझ से इसके निम्नलिखित कारण है, जिसका समाधान आवश्यक है :

१) विदेशी संस्कृति का कुप्रभाव :—भारतीय संस्कृति में रेप और गैंगरेप का कोई स्थान नहीं रहा है। दरअसल विदेशों से आयात की गई रेप, गैंगरेप, किडनैप, मर्डर, ग्लैमर तथा इन्ज्वाय इत्यादि चीजें सिनेमा और टी. वी. सीरियल के द्वारा बहुत ही आकर्षक ढ़ंग से सजाकर महिमामंडित

किया जाता है,. जो हमारे युन्नावर्ग को एक तरह से उकसा रहे हैं । अश्लीलता और नग्नता को भी टी.वी. सीरियलों के द्वारा लगभग सभी घरों में पहुँचा दिया गया, जिसके प्रभाव का ही यह परिणाम है कि इसे युवावर्ग कर गुजरते हैं ।

२) लुप्त होती जा रही मानवीय संवेदना–हमारी तेजी से लुप्त होती जा रही मानवीय संवेदना भी इस सबके लिए कम जिम्मेदार नहीं है, जानवरों और दूसरे प्राणियों के प्रति हमारी मानवीय संवेदना तो कब की समाप्त हो चुकी है, और अब मनुष्यों की बारी है, जिसकी शुरूआत हीं नहीं हम इस दिशा में काफी आगे बढ़ चुके है । बच्चों और महिलाओं के प्रति हम काफी क्रूर हो चुके हैं सिर्फ अप्ननों तक ही हमारी संवेदना सिमट चुकी है । उन ६ दरिन्दों के सामने दामिनी की जगह अगर उसकी अपनी बहन, बेटी होती तो शायद ऐसी वारदात नहीं होती।

३) हमारी विकृत होती जा रही मानसिकता– 'नारी सिर्फ भोग की वस्तु है' यह विकृत मानसिकता भी इस सबके लिए अत्यधिक जिम्मेदार है । आज नारी को सिर्फ भोग की वस्तु की तरह समझा जाता है, मानों उसमें न दिल है न दर्द है, न प्राण है न वेदना है । लड़कियाँ न तो पेड़ों में फलती है और न 'ही खेतों में उपजती है, वो भी किसी न किसी परिवार से ही आती हैं, और बलात्कारी पुरूष भी किसी न किसी परिवार से आते हैं, तो फिर उसके साथ ऐसा क्यों ? शायद विकृत मानसिकता की वजह से । क्या विडम्बना है कि बेजान नारी मूर्त्तियों के समक्ष तो हम नतमस्तक रहते हैं वहीं जीवन्त नारी मूर्त्तियों के प्रति हमारी ऐसी सोच ।

४) अभक्ष्य आहार और शराब—माँस और शराब भी इसका एक कारण है, माँस और शराब भी आज हमारा स्टेटस सिम्बल बन गया है और इसके लिए ही प्रतिदिन लाखों प्राणियों की निर्मम हत्या की जाती है, प्रत्येक दिन करोड़ों रूपये की शराब भी हम डकार जाते है । माँस और शराब का प्रयोग कभी भी हमें सन्मार्ग की ओर नहीं ले जा सकते । माँस और शराब हमारे तन, मन और मस्तिष्क पर दुष्प्रभाव छोड़ता है जिसके प्रभाव के वजह से ही हम अपराध और दुष्कर्म की ओर प्रेरित होते हैं । कोई माने अथवा नहीं माने पर यह सभी प्रकार के अपराध को रोकने के लिए आवश्यक है माँस और शराब का परित्याग और अगर यह संभव नहीं तो फिर समाज यों ही जलता रहेगा और दामिनी यों ही मारी जाती रहेगी । आज हो क्या रहा है, लड़कियाँ अपने घर में अपने भाई और पिता से भी सुरक्षित नहीं हैं, तो फिर कौन सा कानून इसके लिए प्रभावी होगा। आज सारे पवित्र रिश्ते अपवित्र हो रहे हैं, भाई-बहन, पिता-पुत्री, गुरू-शिष्या के अनैतिक रिश्तों के अनेकों मामले उजागर हो चुके है, लगता है सारे रिश्ते समाप्त कर सिर्फ मेल और फीमेल का रिश्ता रह जायगा जैसा कि जानवरों में होता है । आज ५—६ वर्ष की बच्चियों के साथ बलात्कार और साक्ष्य मिटाने वास्ते उसकी हत्या सबके पीछे यही है माँस और शराब ।

५) भगवान से दूरी –उपरोक्त वर्णित कारण तो छोटे-मोटे हैं, इसके मुख्य कारण जानने के लिए हमें अध्यात्म की ओर जाना होगा । आज लोगों को न तो ईश्वर की सत्ता पर विश्वास है और न उसकी व्यवस्था पर, और इस बात से भी लोग अनजान हैं कि उसके कर्मों के तमाम रिकार्ड

किसी अज्ञात कैमरे में कैद हो रहा है, जिसकी सजा उसे अवश्य ही भोगनी पड़ेगी, वैदिक मान्यता है ।

''अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्''

अर्थात् मनुष्य को उसके कर्मों की सजा अवश्य ही भोगनी पड़ेगी, क्योंकि वह न्यायकारी है ।

६) **समाधान**—आखिर इस सबका समाधान क्या है । कड़े कानून बनाकर उसका कड़ाई से पालन करने से मात्र १५ प्रतिशत बलात्कार की घटना जो सड़कों पर होती है उसमें कमी आ पायेगी, पर उन ८५ प्रतिशत बलात्कार का क्या होगा जो घरों में और अपने ही नजदीकी रिश्तेदारों द्वारा होता है, उसका क्या होगा । और सिर्फ रेप की घटना ही क्यों ? आज प्रतिवर्ष हजारों बच्चियों को माँ की गोद से छीनकर अर्थात चुराकर पाल-पोस कर बड़ा किया जाता है और फिर जीवनभर उससे वेश्यावृत्ति कराई जाती है इसका क्या होगा ? आज प्रतिवर्ष हजारों दुल्हनों को दहेज की बलिवेदी पर जिंदा जला दिया जाता है, इसका क्या होगा ? आज प्रतिवर्ष लाखों कन्याओं को बिना जन्म लिये ही माँ के गर्भ में मार दिया जाता है, इसका क्या होगा ? इस प्रकार प्रश्न अनेक हैं पर समाधान क्या हैं ? इसका एकमात्र समाधान है, ''वैचारिक क्रान्ति'' और वैचारिक क्रान्ति बिना सदाचार के नहीं आ सकता, और सदाचार तब तक नहीं आ सकता जब तक लोग अभक्ष्य आहार और शराब का परित्याग नहीं करेंगे ।

सन्तोष है आज स्वामी रामदेव से प्रेरित होकर लाखों लोग मद-माँस का परित्याग कर सदाचार अपना रहे हैं, मगर एक रामदेव से क्या होगा । आज प्रत्येक गाँव और मुहल्ले में रामदेव की आवश्यकता है । इसके लिए शुरूआत हमें बच्चों से ही करनी होगी । बच्चों में नैतिक शिक्षा का संचार कर उन्हें संस्कारवान् बनाना होगा ताकि वे अपराधी बनने ही न पावें ।

यदि हम सचमुच इन सभी सामाजिक बुराइयों को दूर कर सदाचार और अध्यात्म की ओर प्रवृत्त हो पायें तो निःसंदेह भारत एक अपराधमुक्त नशामुक्त वैभवशाली राष्ट्र बन जायेगा, और हमारी यह विजय ढाका में होनेवाली १६ दिसम्बर १९७१ की उस विजय से बहुत ही अधिक गौरवशाली होगा ।

आर्य समाज, मुजफ्फरपुर

गुरुकुल हरिपुर में नूतनवर्ष पालन

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर गुरुकुल हरिपुर, जुनवानी, जिला नुआपड़ा (ओड़िसा) में ११ अप्रैल को उल्लासमय वातावरण में नूतन वर्ष का पालन किया गया। सर्वप्रथम आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में बृहद्यज्ञ पूर्वक कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ । जिसमें ओड़िसा एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों के विभिन्न ग्रामों से पधारे हुए शताधिक धर्मानुरागी सज्जनों ने नई प्रेरणा, नये उत्साह की प्राप्ति के लिये यज्ञ भगवान् में आहुति प्रदान कर नववर्ष का आह्वान किया।

दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य, गुरुकुल हरिपुर

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

आर्य समाज स्थापना दिवस :–नव सम्वत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् २०७० दिन बृहस्पतिवार तदनुसार ११ अप्रैल २०१३ को सायं ६ बजे से आर्यसमाज कलकत्ता के सभागार में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया । कार्यक्रम सायं ६ बजे से यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ । कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज बड़ाबाजार के पूर्व प्रधान श्री खुशहालचन्दजी आर्य ने की । श्रीमती सत्यवती गुप्ता, श्री महेश आर्य एवं भजनोपदेशक श्री कैलाश 'कर्मठ' जी के भजन हुए । वक्ताओं में श्री कृष्णादेव मिश्र, श्री वेदप्रकाश शास्त्री, श्री देवव्रत तिवारी, श्री योगेशराज उपाध्याय एवं प्रधान श्री मनीराम आर्य प्रभृति व्यक्तियों ने आर्य समाज की आवश्यकता तथा वर्तमान चुनौतियों के समाधान में आर्य समाज की उपयोगिता पर प्रकाश डाला । कार्यक्रम का संचालन मन्त्री श्री सत्यप्रकाश जायसवाल एवं श्री विवेक जायसवाल ने किया । कार्यक्रम का समापन सहभोज के साथ हुआ ।

रामनवमी पर्व :–चैत्र शुक्ल नवमी सम्वत् २०७० तदनुसार १९ अप्रैल २०१३ को सायंकाल ६ बजे से आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में मनाया गया । यज्ञ के उपरान्त पूर्व प्रधान श्री श्रीराम आर्यजी की अध्यक्षता में सभा का आयोजन किया गया जिसमें वक्ताओं ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्श जीवन को अपनाने पर बल दिया । रावण के जीवन में तीन बुराईयाँ प्रमुख रूप से थी । वह मांशाहारी शराबी तथा दुराचारी था । इसके विपरीत श्री श्रीराम का जीवन इन बुराईयों से रहित आदर्श जीवन था । यदि हम भगवान् राम को अपना आदर्श महापुरुष मानते हैं तो सभी को इन तीनों अवगुणों का परित्याग करना चाहिए । वक्ताओं में श्री कृष्ण देव मिश्र, श्री विवेक जायसवाल, श्री वेद प्रकाश शास्त्री, श्री देवव्रत तिवारी एवं प्रधान श्री मनीराम जी आर्य ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये ।

(शेषांश पृष्ठ ६ का)

युगद्रष्टा भगत सिंह नामक पुस्तक में पृष्ठ १७४ पर एक प्रसंग आता है ।

''भगत सिंह और दुर्गा भाभी एक दिन होटल में रहे । दूसरे दिन सर छाजूरामजी की कोठी में चले गये और एक सप्ताह से अधिक वहीं रहे ।......भगत सिंह को वहां रखने की और निश्चित रहने की स्वीकृति सर सेठ छाजूरामजी की पत्नी लक्ष्मीदेवी ने ही सुशीला दीदी को दी थी । इन लोगों को ऊपर की मंजिले में ठहराया गया था और भोजन वगैरह की व्यवस्था स्वयं लक्ष्मी देवी ही करती थीं । उन दो के अतिरिक्त भगत सिंह का सही परिचय किसी को भी न था । यह इतिहास का चरित्र है कि उसने एक सप्ताह के आतिथ्य के बदले में माता लक्ष्मीदेवी और उनके पति सर सेठ छाजूराम को सदा के लिए अपना अतिथि बना लिया। ''

यहाँ यह तो सुस्पष्ट है कि सर छाजूरामजी के जीवन में क्रान्तिकारियों के लिए कितना बड़ा स्थान था । छाजूरामजी की कोठी सेठ की कोठी थी और इस क्रान्तिकारी का रहस्योद्घाटन कभी भी हो सकता था । इसीलिए सरदार भगत सिंह को छाजूरामजी की कोठी से आर्यसमाज मन्दिर १९, विधान सरणी में स्थानांतरित कर लिया गया था । यह व्यवस्था चौधरी छाजूरामजी की ही थी । भगत सिंहजी आर्यसमाज कलकत्ता के मन्दिर की छत के ऊपर गुम्बज वाली एक कोठरी में रहते थे । यह गुप्त प्रवास ही नहीं था अपितु मृत्युवरण का एक चरण भी था । सरदार भगतसिंह इसे समझते थे । उनके साथी भी इसे इसी रूप में समझते थे । आर्यसमाज कलकत्ता में भगत सिंह अपने परिवर्तित नाम– 'हरि' के नाम से जाने जाते थे । अंग्रेजी पोशाक और हैट लगाते थे उनका हैट वाला प्रसिद्ध चित्र आर्यसमाज कलकत्ता के निवासकाल का ही है । यह क्रान्ति के पथ पर चलते हुये बलिदान की यात्रा थी । ऐसा बलिदान जिसे वे लोग निश्चित-सा ही मानते थे । आर्यसमाज कलकत्ता मन्दिर से चलते समय सुशीला दीदी ने भगत सिंह को अपने रक्त का टीका किया था । भगत सिंह की यात्रा जहाँ अपने में गौरवमयी है वहां चौधरी छाजूराम के देशप्रेम और क्रान्ति प्रेम की उज्ज्वल कहानी है ।

चौधरी छाजूरामजी कलकत्ता से जाने के पश्चात् पंजाब कौंसिल के सदस्य भी बने थे । चौधरीजी का जीवन आर्यसमाज के इतिहास और सार्वजनिक इतिहास में सदा समादरणीय है

(आर्य समाज कलकत्ता के शत वर्षीय इतिहास से)

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए पं० उमाकान्त उपाध्याय, एम०ए० द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित । मो. : ९८३०३७०४६३